श्री कृपानिवासजी की पदावली

श्रीगणेशायनमः ॥

कृपानिवासकृतपदावली ॥



अथ अष्टकाल समय जजन बिधि ॥

पद श्रीहनुमान जीको मंगल वर्णन ॥

चौताल ॥

पूरण ब्रह्म सदा गुरुदेव देवन पति श्री हनु-
मत महराज । जन मन रंजन सब दुख गंजन
सुजन सुधारनकाज ॥ शरण उबारन बिघ्न बिदार-
न दीननके तारन जगत जहाज । कृपा निवासी

तेरी जनम जनम चेरी मेरीतौ तुम्हैं प्रभुलाज १

जानकी चरण हरण दुख द्वंद फंद जगशरण सुखद सदबंदन। करन मनोरथ तरन कुतमपथ दरनताप हिय चंदन॥ पावन परम पद भावन रसदसु उदधि बढ़ावन कुबुधि निकन्दन। कृपा-निवासी मन बसत समन श्रम दवन असदभ्रम फंदन॥ २॥

कौन हरै प्रबल पाप सरयू बिनमेरे। नखशिख सौं दूरि किये जनम जनम केरे॥ योग यज्ञ ज्ञान क्रियातीर्थ बहुते रे। कारि देखे सबहिं दुरित आवत नहिं नेरे॥ चन्द जैसे तापहरै सूर्य्य हरै अंधेरे॥ सरयू को नामले अघ न मिलेहेरे। सरयू सरसार

वेद तारन को बेरै। कृपानिवास प्राण सदा सरयू तट डेरै॥ ३॥

चित्रकूट चंद द्वंद पद पराग राघो। बैठौ फंदतोरि अंध जगदुर्गंध त्यागो॥ मोह मदन नींद बहुत सोयो अब जागो। ठगनाते सब जगत जानि समुझि वेगि भागो॥ गुण सुकुंद मोदकंद गावो रुचि पागो। जन्म सुफल मानि सुघर प्रेमभक्ति मांगो॥ कामद नग ध्यान प्राणराघो सीयलागो। कृपानिवास सखा सअली मलिन रति बिरागो ४॥

रागभैरव आड़ताल॥

प्रथम उपासक भाव बिचारे। सतगुरु दया सखीतन करि निज रंगमहल रस रहसि निहारे।

टेक॥ तन कृत करि गुरु प्रेमभावना आयसुपाय महल पगुधारै । मधुर मधुर गति मधुर भावसों मधुर मनोहर सेज सँवारै ॥ ४ ॥

सोये सजनी रजनी उनींदे सुरति बिनोद प्रमोद अपारे।निरखि झरोखन सकुचि जगावन उनमत छबि लखि प्राणबिसारे ॥ मंगल आदि शृंगार सेजसुख चिद बिलाश रस टहल सँभारे। कृपानिवास श्रीराम प्रियाकी कृपा अगम सब सुगम हमारे ॥ ५ ॥

रागभैरव चौताल ॥

बाजत बीण प्रबीण सुहागनि केकर रंगमहल के द्वारे । उचरत तान तरंग अनंग भरि मनु झरि रंगफुहारे ॥सुनत लाल जगि सुरति उमँग

पगि सिय जीवन सुख रहासि उधारे। कृपा
निवास सखी नूपुर रव सुनि मनमोद अपारे६॥

चरच्चरीताल॥

शुभग सेज सदन रंग राजत सियलाल संग
रस अनंगजीत जंग प्रातलसे प्यारे। मनस्वरूप
मोहनिशि चंद किधौं रोहनी सि ललनि छटा
सोहनी सि सुंदर उपहारे॥ दोऊ लालगसि रसा-
ल प्रातकाल नहिं सँभाल उभै चंद्र प्रेमजाल
सोवैं मतवारे। चहुँओर सखि चकोर उझकैं
छबि ठौरठौर चमचमात नैनभोर शर्द रैनितारे॥
छूटे दरि परद बन्द अगर सुरभि अति सुगंध
गुंजत अलिबृंद बृंद सुख समन्द सारे॥ सकल
सखि चौप चमकि चाहि छकित रव कि रहति

बार उझकि उझकि द्वार लगि संभारै। औसर सुख समझि खरी रसबिनोद विफुलभारी आलस तनदेखि डरी मधुर भाव पारेउ सिमटी श्री प्रसाद आगे सबसमाज पांयलगे कृपानिवास भागजगे पलक कछु उघारे ॥ १ ॥ ६ ॥

आज्ञाप्रवेश आयसु सुनिकरि प्रवेस मधुर भाय मधुरवेष सुघरजानि सुरति शेष झुकि समीप आई। नूपुरधुनि ठुमकि ठुमकि किंकिणी सु झुनकि झुनकि झमकि झमकि चपल चलै जेवन इतराई। सोंधे की लपट झपट भ्रमरमाल गंध दपट उघटति सुप्रबंध छन्द राग मधुर गाई॥ बीणादिक धुनि मृदंग तार ताल सुर सुरचंग नाचति गति अति सुगंध रंग रससरसाई।

सुभग गौर अंग नारि केसरिकी रचित क्यारि
सकल फरी प्यारी युगल भाव सों भराई ॥
अपने गुण गुणति भणति जैजै सुकुमारि प्रणति
सुनति सेज मुखर श्रवण मँगन मन लगाई ।
केलि कलित ललित लसे श्याम गौरि दृगनि
बसै प्रफुल बदन मँगन से मान सुख सजाई ॥
युगुल मन निगुण प्रवीण रस प्रवास रहति
लीन कृपानिवास सिया रमण भवन सेवकाई॥

प्रार्थना ॥

जैजै छबि लाल ललन सुरति केलि कुलन
मिलनि नव सरोज बदन आलि निलोयन सुख
दीजै ॥ अघटरस बिनोद श्रसव बरउरोज सुमन

प्रसव उघरेतन अंग द्रसव आयसु बलि कीजै। अष्ट भवन सखी रवन ठाढ़ी सब प्रफुल सुमन चाहे अभिराम द्रवनि हित प्रणाम लीजै॥ अंघ्री मूलपरसि कोउरस प्रसून बरषि कोउ बिजन करसि हरखि कोउ लखि प्रकाश रीजै॥ २॥

नवल नेह सहचरी सु प्राण प्रीतगुण भरी सु उघाटि सुख बिलास सुघट प्रगट आस जीजै। सुकर जोरि करि बिनीत प्राण प्रियापिय सुमीत लउवति बरलाउ प्रीतरंग सोर गीजै॥ ३॥

बदति बैन सुघरलाल जागो बलिकारि निहाल कंजदृगनि माल पाल बरदिनेश श्रीजै श्रीप्रसाद मन हुलास सियालाल हित प्रकास। कृपा निवास आससदा रस उपास पीजै॥ ७॥

जगावनि ॥

प्रात अलिपुंज मिलि श्री रंगभवन गावैं। तीनग्राम सप्तसुर सुराग मधुर भावैं॥ललित बीन झीन गति नवीन बीन ल्यावैं। मंद मंद कैउ मृदंग संग रंग छावैं। नूपुर सुनि झनकि झनकि रमकि रमकि आवैं ॥ सुलपतान मात भनत अनंगसों जगावैं। बिबिधि रहसि गहासि२बिहँसि बिहँसि पावैं॥ चंद्र बदनि रमनि चपल चातुरी चलावैं। युगल नेह देह भोहि लोयन ललचावैं॥ माधुरी सुहाग रहसि लाग लागि सुनावैं। केलि सरसरेलि भाम कामरति लजावैं॥ कृपा निवास आस लली लाल को जगावैं॥ ३॥ ४॥

जागो युग कमल नैन भोर भई बिगत रैन

सुखमा ऐन सकल दासी बलिहारी। प्रगटो
मुख सर्बरीस जलद पटल पटवरीस प्रफुल
बिहँग चक्षु कुमुद प्रमदा अधिकारी ॥ १ ॥
युगल हंसजस प्रसंस प्रचुर प्रबल शुभ्रअंसु
सकल कर्मभर्म बिपद असमत प्रहारी। बिगसैं
दृगकंज पुंजसुखबिशाल मधुप गुंजमंजु तलपनभ
प्रकास लाज छयाढारी ॥ २ ॥ जेते गुणगुणी
द्वार राग रंग नृत्यकारि करि जुहार बांछित
सुखसारेंपियप्यारी। बोलेखगद्रुमानिकुंजपल्लवफल
सुमनमंजु सब समाज साजराज संपातिबिस्तारी
॥३॥ कौतुक कलकेलि उघटि मानस क्रम बाक्य
सुघटि प्रगटहिं निज हेतु सुखद आयसुअनुसारी।
दरशस्वाति बिंदुरसद चात्रिक सबचाह बिसद

बानी बर बारिद बद श्रवण सिखि सुखारी ॥ ४ ॥
सेज निकट सखि सुबृंद परसति चरणार्बिन्द
जै जै आनन्दकन्द सुखनिधि सुकुमारी । मनु
तमाल कनकलता प्रीति पवन मत्त यथा करत
यतन मालनि जनु सम सुरंगवारी ॥ ५ ॥
भूषण बर बसन भोग उझकनि मग पगनि
योग सुरति जोग शेष हमैं दीजै बलिहारी । प्राण
जीवन चूड़ामणि उरउपास सर्ब सुधन करुणा-
निधि गुणउदार प्यार पर बिचारी ॥ ६ ॥ जान
तिलक केलि कलानि हलनि डुलानि श्रमित
ललन पलन लगे रजनी सुखसेज मिलनि भारी ।
हमरे घट आस पास अघट छिन छिन सुखनवल
प्रगटअष्टभवन रहसि त्रिसद बिलसो सचीरा ७ ॥

समय जानि अति सुजान कलमलान बसी
प्रान पिया उरोज गहै पानि कान दृग निहारी।
श्रीप्रसाद सुखप्रकास कृपानिवास भरि हुलास
जागे सियराम रास रहसि रसबिहारी ॥८॥

आलस ॥

जागे जब युगुललाल आलस बसि छबि
रसाल निरखि दृगनि सब निहाल प्रात सुख
बधाई। बिपुरन कल कुंचित कच सुमन बिबिधि
लसत सुरुचि उड़गण लै तिमर कल चंद शरनि
आई ॥१॥आलस मद अरुण नैन घुरनि तन
पकंज अपन लैनवास भ्रमर माल भृकुटी सुघ-
राई। बदन मदन मद सु निधन रदन छदन बिंब

कदन मगन अंग सुरत तुरत सुरति मुख जँभाई २
दोऊ जन भुज अंशधरी शिथल अंगालिंगन
करी मनु तमाल कनक लता शाखा लपटाई ।
दशन छद कपोल कलित चुंबनि शशि मध्य
ललित मनहुँ सुरति शारद की युगटी चतुराइ
॥३॥नखन चिह्न श्याम अंग शोभा मथि अति
अनंग मनु तमाल ललमुनी रैनि की बसाई ।
बिगलित गलमाल ठरनि मुक्ता झरि सेजपरनि
स्वाति बूंद प्रात शरद धरति सिंधुमाई ॥ ४ ॥
सारी शिर पेंच ढरे बिबिधि बसन फरकि
परे परस्परनि प्यार भरे रति शृंगार छाई । बर
उरोज नगन खरे देखि दृगनि श्याम हरे मदन
कलश सुरस भरे लालन ललचाई ॥ ५॥ मधुर

बैन श्रवत मैन अलसानी आलि चलति सैन रैन की कमाई प्रिय नैननि बतराई । गोर रंग श्याम रंग शारद प्रतिबिंब गँगनि कालींदी जनु दीप दाम श्याम गौरताई ॥ ६ ॥ प्यार निरार भारि सुमोद करि बिनोद पिया गोद रंग रसिक रैनि क्रिया साधि अंक ल्याई । प्राणपति सुजीव निरस पीवनि अनुराग भरी हरी रूप सुखमासुख पाय तन समाई ॥ ७ ॥ कछुक जाज सुरस काज निरखि निकट सखी समाज छबि बिराज नवल दोउ मुरकि दृग नवाई । श्रीप्रसाद जान-की जु बल्लभ सुखदानकी जु कृपानिवास प्राण की जु पारस निधिपाई ॥ ८ ॥



पदरति श्रृंगार॥

प्यार अधिक प्यार मन भाई। नख शिखसों फूल फलित कंचन कलबेलि कलित बलित छबि बिभार झुमकि अंकनपरआई॥सुरतिसुखसुहाग बढ़ी जौबन अनुराग मढ़ी चढ़ी चहत रंग सूर-जीन बिजय छाई। लोचन मद घूमि घूमिराते कछु भूमि बाल चूमि चूमि अधर लाल लोचन ललचाई॥ २॥ भोरहि आनन्दकंद उरझे रस फंद सुघर मन्द मन्द अंचल दै चंचल दै चंचल मुसकाई। सिया झुके बदनारबिंदवारों सखिकोटि चन्द मोहे रघुबीर चन्द कृपानिवास माई॥७॥

ख्याल॥

रंग रंगीलेदोउ सोय जगेशी। बिथुरी अलकें

अलसी पलकैं रंग सनेह सुरंगमगेरी ॥ मद रस छके बिराजत लालन ललना के रस रंग ठगेरी । कृपानिवास श्रीजानकी बल्लभ सखियन के दृग निरखि पगेरी ॥

चौताल ॥

सेज सलोनी सागर नागरि पद कमलन में भ्रमर लुभाये । रैनि बसाये नाहिं उड़ावत मोहिं दिखावत श्याम सुभाये ॥ १ ॥ कहत प्रसादनवल सुन्दरि सुनि पिय के हांथनि बेग धुवाये । कृपानिवासप्राणबल्लभश्रीरामबिलोकतरहेललचाये॥

रंग रस भीनीं द्वुतियाकी शशि सुभग कपोलनि पर छबि देत ॥ टेक ॥ सकुचतहास प्रगट अनुबोलत निर्तत चित हरिलेत॥ अटके लोचन

लोचत लालन दरशन पावत सखिनसमेत । कृपा
निवाससिया स्वामिनि सुख जीत विराजत रति
रणखेत २ ॥

देखरी दिखाओं तेरे मुखकी निशानी ।
मुकुरधरो करबदन निहारो रैनकी कमाई करी
पैरै तोहिं जानी ॥ रदन परस कछु दरश कपो-
लनि काजर मध्य पीक लपटानी ॥ कृपानिवास
श्रीजानकी सयानी कपट चातुरी बोलतबानी ३

देश मूलतान ॥

रामरसिकसों रसकरि प्यारी लसिरही नैन
खुमारी । झुकि झुकि आवैं अलकैं पलकैं मुखपर
बिना सवांरी ॥ कृपानिवास बिलासनि सियजू
पियाभाय मायक मतवारी ॥ १ ॥

नवरँग भीने भोर भावते रामसिया संग सोहैं। रैनिजगौंने नयन लहैं मैन महारस जोहैं॥ कृपानिवास बिलासी दम्पति रसिकनके मनमोहैं॥ २॥

भोरभये जनि बिछुरो प्यारे तुमकों मेरो सोहैं। लागिरहो उर प्यारे मेरे सुखको भानि समोहै॥ कृपानिवास श्री रामतिहारो मोसी औरनकोहै॥ ३॥

रामरसिक सों लगनि लगी है और नभावै माई। चात्रक स्वाति बूंद अनुरागी गंगादिक बिसराई॥ कृपानिवास लगी नल नीलौ रखि राघो सुखदाई॥ ४॥

रागबिभास मूलताल ॥

नवल छबीले दोउ सोय जगेरी । अकथ कथौं कछु छबि सुघराई॥ गौर श्याम भद्र श्याम गौरिभै बिवतनु तरत बरनपर छाई । दृग अंजन अधरन पर सोहै कुच केसरि पिय उर लपटाई । कचबर पेच औ चिरति भुलन बेसरि सरल सभै बलखाई ॥ सुरति समर बरबीर बिजय परलोचन घूमत युत अरुनाई । कृपानिवास विलासनि सियाजू बल्लभसों मृदुकहि मुसकाई१॥

लाल लड़ैती तलपछकि सुखदेखि बनी गुण गरब गहेली ।सुरति अनीत जीतमतवारी भावत समयसुबेली ॥ पियधारि अंक निशंक उदारनि परम चतुर कलकेलि नवेली। कृपानिवास बि-

लासनि सियजू बल्लभ सो हंसि कहत सहेली २

मनुरस भोम सोम को संगति युगलोयन मैं खुबिरहो आजु। अलसीनी चितवन में चमकत जनु खंजन शिरमौर बिराज ॥ १ ॥ रामानिहारत वारत तनमन दृगनि सिहावत सखिन समाज। जयति निवास कृपा स्वामिनिकी छबि सुन्दर पर कछु यक लाज ॥ ४ ॥

नवल छबीली लैबैठो सुख लिखिपाती छांती मधुरात। सुरति विनोद मोद की कीरति लिखवाई प्रीतमकी हात॥ अलसावति भुज मोर मरोरत त्यों त्यों प्रगट होत प्रभात। जयति निवास कृपा स्वामिनि मोहिं रिझवावत निज गुनपात ॥ ५ ॥

राग मूलताल॥

प्यारी लगत प्यारी बात रसीली प्रातसमय बतरात ललनसों। कछुक जनावत कछु बिसरावत सकुचावत कछु कहत छलनसों॥ तुतरावत मुसक्यावत मद भरि सतरावत हँसिहेरिये पलनसों। कृपानिवास बिलास छकी सिया पियहि रिझावत केलि कलनसों॥ १॥

मोरे पियरवा तोरे संगजागी अब न टरो लगिरहिहो गरवा। रैनिकरी बश अब हमरे बश करिहौं कुँवरबर उरकर हरवा॥ भोरहु भयो नहिं चौंकिपरै कसकगवा हो बनमोरवा। कृपानिवास श्रीरामरसिकअबरस बिलसोतजि लाजनिडरवा२

देवगंधार आदुताल॥

भोरहिं छबि प्रीतम के मनभाई। सब रस भरी उमंग बढ़ावति हँसि हँसि लालजगाई १॥ अंजन खंजन सुकर बनावत बसन सुगंध भिगाई। चोलसकेर सुभगतनु बैठी कुचदैयानि लजाई॥ पोछत बदन मदन रस सरसे प्रीतम प्रीत सवाई॥ कुच कुमलाई कलीउठावत चुटकीचटक जभाई। अलक सवांरत पलक उघारत सकल सौजअलसाई॥ पियाकी गोद बिनोद बिहारनि चमकि अंग अंगराई ४॥ नैन उघारि सखिनसों बोलति लालनसों मुसक्याई। कृपानिवास श्री जानकी प्यारी प्यार प्रिया उरलाई ५॥

राग रामकली ॥

सेवा सौंज लिये सबनारी मुखपर छालत कंचनझारी। कोई रद्मज्जति पटु पट सरसति कोई सखी अलक सँवारी ॥ १ ॥ कोई बेसरि बल गुंज सुधारति कोई कुंडल झुमकारी। कोई पागियाके पेंचबनावति कोई झलकावतिसारी२॥ कोई दृग अंजन तिलक तंबोलनि कोई कुच कंचुकी धारी। कोई तकिया पर गैध बिछौना पधरावत पियप्यारी ॥ कोई मृदभाय जनाय लड़ावति सुकुमारति सुकुमारी। कृपानिवास श्री जानकी बल्लभ छबिपर मैं बलिहारी ॥ ४ ॥

मंगल भोग समै रुचिकारी जीमत प्रीतम

प्यारी ॥ मंगलमेवा मगद सुमोदिक लड्डुवालाड़
लड़ारी १ कछुयक चाट सलोने लोने दोनेकनक
सुथारी। फैनी फैन मलाई दधिसों लपटी सुभग
सुहारी ॥ २ ॥ कछुक दिखावति रुचि उपजावति
हर्षि जिवावति नारी । सुभग कटोरें सलिल
पिवावति कर धरि कंचन झारी ॥ ३ ॥ अचवन
करि भरिबीरी मसालनि गिरी कपूर सुपारी। कृप-
निवास उपास प्रसादी बाढ़ति सब अधिकारी ४

मंगल आरति सहचरी। कंचन कोपर मंगल
भरी ॥ १॥ मंगल रूप धरै पिय प्यारी । गावति
सब मंगल अधिकारी । २ । मंगल समय बिराजत
लोने । मंगल राम सिया छबि सोने ॥ ३ ॥ मंगल
गान बजै मंगल धुनि ।मंगल मंदिर नाचत रुनि

ऊनि ॥ ४ ॥ मंगल पवन सुगंध महल में मंगलमाती रूप गहल में ॥ ५ ॥ मंगल धूप दीप न्योछावरि। मंगल रंग अभंग अमावरि॥ मंगल कृपानिवास उपासी। भये सु मंगल गईहै उदासी ॥ ६ ॥

मंगल मूरति अवध बिहारी सीतापति की मैं बलिहारी ॥ १ ॥ मंगल सरजू अवधपुरी शुभ मंगल सखी सबै नरनारी ॥ २ ॥ मंगल नृप दशरथ सब नारी मंगल कौशल्या महतारी ३ ॥ मंगल हनुमत आँनँदकारी। कृपानिवास मंगल अधिकारी ॥ ४ ॥

अथमज्जनसमय रागबिलावल॥

साजि सकल सुखसौज सखीजन । कोई ञू

बुलाव रति अरघ सुहावनि कोई पधरावति चौकी चौकनि ॥ १ ॥ प्रथम फुलेल लगावति अंगनि कोमल शुभग युगल परसै तनु । पट अंतरमंतर रस उचरति निगम सुतंतर मोहिसुनत धुनि ॥२। सोधें सनी सौज बहुबिधि सों करति हरषि सहचरी तनु उबटनि गावति राग सुहाग बिलावल नाचति नागरि आगर बनि ठनि । कंचन कलस अमल जलहिं तरल समय सुहा- वनि सुख उपजावनि ॥ सरयू गंग मंदाकिनि पयसुनि सेवति सकल सखी बनि रुचि मन ४ मृदुल अंगोछनि अंग अंगोछति वारति जल पट निरखि तोरि तृन। कृपानिवास श्रीजानकी बल्लभ सोहत सुंदर करि सुख मंजन ५॥

चारिताल ॥

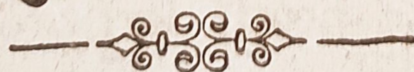
प्यारी मंजन करत राम सँग सरयू सलिल सुगंध सुहाये। कनक कलश कंचन चौकी पर पूजि यथा बिधि छाये ॥ १ ॥ मन्त्र तन्त्र बद वेद बिदुष सखी सम्मत मंगल गाये। कृपानिवास मलयक कुंमकुंम सीधेचर चढ़ाये ॥ २ ॥

अथ शृंगार समय ॥

सकल सुनारी प्यार परमाभारि करत शृंगार सवांरि युगलवर। लहँगा ललित कलित कटि धोती कुच कंचुकि वागोवर नागर ॥ १ ॥ युगल कमल पद बिमल महावरि रचित सुघर लखि अरुण नैन कर। पद पावन पद पान मनोहर

पद जु बिभूषण पायल नूपुर॥ २ ॥ गुल्फें कमल जानु कटि किंकिनि छुद्रघंटिका माल कर निगर। उदर रोमराजी त्रिवलीबर नाभि सु सुभग सोंधे सींचत तर॥ ३ ॥ मलय कर्पूर सु केसरि लेपन प्रिया कुच सुन्दर प्रीतम उर पर। पदिक हार माला मोतिनकी चम्पकली दुलरी तिलरी ठर ॥ ४ ॥ मणिमाला मुक्तावलि कंठी चौकी चौक सो राम सुभग धर। भुज प्रलम्भ अंगद युत भूषण चारि चारु चुरी मुदरी पर ॥५। युगल बदन सुख सदन मनोहर चित्र कपोलचिबुक बेंदीथिर। दशन दमक द्युति बीरी रोचिक बिंब बिलज्जित मृदु अरुणाधर ॥ ६ ॥ श्रवण तरोने फुल झुमका कनकलता मनुफुल फरी। फरलाल

श्रवण कुंडल धरि सुघरनि शशि मंडल मनुकीह्न मकर घर ॥ ७ ॥ नाशालटकन सहित नथुनियां दृग अंजन खंजन तिम नासर । भाल बिशाल युगल श्रीशोभित अर्धचन्द्र उपमा जगकीहर ८ टीको बंदी शीशफूल मणि क्रीट चन्द्रिका जटि मुक्तालर । अलक झुकाई इन्दु सदन जनु सुधा लोभ नागिनि न सकीटर ॥ ९ ॥ मुक्तन मांग भरि गुहि बेनी कछु उपमा आई मोरे उर । शीश सुहाग पांति मनु उघरी परी सु पीठि गुमान गहरटर ॥ १० ॥ दोउ कर सुमन छरी उपरना सारी सरस फैल फबि सुन्दर । कृपानिवास श्री जानकीबल्लभ दुलरावति सहचरि रँग मंदिर ११



चौताल॥

सखियन सरस शृंगार सवांरे प्यारे जानकी रसिकर सवांरे। नख शिख भूषण बसन लसति दुति हँसति दशन अरुनारे॥ १॥ कमल कर-निकल मुकुर बिलोकत बदन मदन मदगारे। कृपानिवास रूप छबि सागर नागरनैन निहारे २

ख्याल॥

प्यारी मेरो मन तोसों लग्यो तेरो मन मेरे संग। तुम्हरी प्रीत सनेह हमारो जलकसुंभलौं रंग॥१॥ एरी तेरी आंखि नैनमे रे झख बिहरत रूप तरंग। कृपानिवास मिले सुख बिलसत रससागर रस गंग॥ २॥

आड़ताल॥

भरी रंग राम रसिक रसिकाई । बीनबजाय प्रवीण प्रियाकी कीरति गाय सुनाई ॥ सोंधे सगबगी अलक सुधारत दृग अंजन रुचि रेखबनाई । कृपानिवास बिलासनि प्यारी लालन ललित लड़ाई ॥ २ ॥

लगे दृग दम्पति रूप रसीले । उदित भानु मनु कमल कोषपर केसर भ्रमर बसीले । मौन चपलता तजि तैसी द्विज मुरि बतरावत बदन हँसीले । कृपानिवास लगाये सियावर प्रीति उ-सीले ॥ ३ ॥

रामसिया राजत रँगमंदिर ॥ राजसभा शोभित सब सुंदर । रतन जटित कंचन सिंहासन साइ-

वान बीतान तनेतर ॥ १ ॥ अद्भुत बिछे गेंद
बहुतकिया कंचन कलस सुछत्र युगल शिर।
मणि मुक्तनकी रोमरोमावलि झालरि कोरजूरी
परदापर ॥ २ ॥ जयतिप्रसाद सुचन्द्रकलासी
करति खवासी चमर बिजनधर। मुकुर दिखावति
छत्र फिरावत सूरजमुखी चहुँदिशिगुनभर ॥३॥
सकल साज सजि गुनी गुननिसों समय विलो-
कति खरीसुघरबर। कृपानिवास श्री पाकभवन
तैं भोगसौंजि लाई तब नागर ॥ ४ ॥

जीवत राम जानकी प्यारे ॥ समय शृंगार
सु भोग सुधारे। दधि सोंधे पकवान मिठाई
पगेपाग वह सकरपारे॥ मगद मखाने मठरी
मीठी मठाबनाय स्वाद सों नारे। कंद कटोरन

थारसौंज धरि कहि कहि नाम जिवांवति सारे॥ हर्षि परस्पर लैलै आवति ललचावत हँसि हाथ पसारे। मुसकावति करकेलि किलोलति सो मुख जानत प्राणहमारे॥ सरयु सखी नीर झारी लैप्यावति रुचि भावति सुकुवारे। कृपानिवास अचय उठिथारी सुभग मसाले डारे॥ ५॥

आरति करत शृंगारकी सोहत पिय प्यारी। सकल सौंज साज साजै सखि कर कंचनथारी॥ क्रीटमुकुट रचि चन्द्रिका पीताम्बर सारी। गौर श्याम जोरी बनी शोभा अतिभारी॥ कोटि मार लघुसे लगैं कोटिन रतिवारी। चितवनि दोउकी माधुरी रसजन हितकारी॥ अगणित बाजे बरबाजे निर्तत सबनारी। कृपानिवास

राजै भले दासी बलिहारी ॥ ६ ॥ ॥ ॥

राग बिलावल ॥

मुखसों जो कहो सुख बातरी । मुखरजनीरस हेजनी रसहेजनी सजनी कीजै श्रवण सनारी १ नवल मिलन मैं जो रस उपजो कहुँ प्रीतम निज चातुरी । सुरति सुहाग रागरस हेत न खेत रह्यो किस हाथरी ॥ २ ॥ हमजाने भोरी भोरे पियरंग रंगे नवगातरी । कृपानिवास बिलासनि जानी बाणी मैन समातरी ॥ ३ ॥

सखी कछु कहि नहिं जातरी । जबदेखौं तब लाल लालची छिन छिन हाहा खातरी ॥ रस लंपट संपुट कर मोही भोई मधुरी बातरी।जोबीती चितमित नहिं पइये हित हिय मांझ समातरी ॥

मुखसों दुख दुखसों सुख जानों हाहा लाल सिहातरी ॥ कृपानिवास बिलासनि चंचल अंचल दै मुसक्यातरी ॥ २ ॥

रागटोड़ी चारताल ॥

आजु साज सुन्दरी कञ्चन नव बेलि मनों भूषण जटअंग अंग फूलन उरझान की। मधुरी मुसकान मानतीखी मुख चपलतान पेषत निज बदन सुघर आरसी सो पानकी ॥ छाके रसनैन मैन उघरत दुरि जात कबहुँ पलकन सौं पटला जोति झलकानि शशि भानकी। श्रैसीरसरास वभी कृपानिवास मोहिरहीं नैनके मध्य मनों पूतरीसी जानकी ॥ १ ॥

रागटोड़ी चारताल ॥

रामचन्द्र पटरानी राजत रतन सिंहासन रंग भरे । बदत परस्पर बैन रैन सुख नैन मैन भंग करै ॥ हास बिलास परम सुख छायो सखि जन चित उमंग हमेरे । कृपानिवास अली हित आनँद दोउ रलिमिलि रससंग ढरे ॥ १ ॥

अंजन कर खंजन नयनानि में कैसी लगत है सियाजू प्यारी । कर बर दर्पण हगनि सवांरत नवल कमल बिच रचि रेखैकारी ॥ मुरिअवलोकनि पियमन पोषनि कबहुँ कहासि हँसि ओटन सारी । कृपानिवास श्रीराम भामिनी पर कोटि करति सतनारी वारी ॥ २ ॥ सियालाड़ली सुकमाररी देखो सखी लाल लड़ावती॥ पलकनि

सों पगपरस डरावत फूल न उर पहिरावतरी। बसन बिभूषण धरत उठावत तन न छुवावत सकुचावतरी। कृपानिवास श्रीराम रसिककी प्रीति परखि प्रिया मुसकावतरी ॥ ३ ॥

मूलताल ॥

एरी तेरे नैनकी सैनचलै मतवारी। बिवसभयो मनमेरो मतवारो लम्पट तुव रस केलि अहारी ॥ पलन हलै पलकनिसों अन्तर सुन्दर नेहबिकारी। कृपानिवास श्रीजानकीजानी बीर बिजै बरनारी ॥ ४ ॥

प्यारेहो तुमसन लगिगई लगनिमोरीतुम नाहिंन पहिंचानी। तुमहौ भूप अनूप अनोखे रूपरसिक अभिमानी ॥ तुम गरजी अरजी कस-

मानों लरजिकहौं मुखबानी । कृपानिवस रामरसदानी क्या कठिनाई ठानी ॥ ५ ॥

लगनलगौनै नैनातोरेरी। खंजनछोने चलि तिरछौने प्राणहरौने मोरेरी ॥ कारे कोने मन उरझोने ललित ललोने डोरेरी । कृपानिवासी सियापिय पहिंचाने जानेस्थाने भोरेरी ॥ ६ ॥

सेजभवन रस सुख अनुभव करि बतरावति नैननमैं। सुघरनकी उघरत नहिं रहिसै सुघर लखै सैननमैं ॥ १ ॥ गुनानि भरी मुसकानमनोहर सखि जन सुख दैननमैं । भाय बिलोकनि रोकनि बानी जानी कछु चैननमैं ॥ स्वादसीर आवै भरि अंगानि रंग ढरे ऐननमैं। कृपा निवास उपासिनिके हित प्रगटकरी बैननमैं ॥ ७ ॥

अपनेसुखकी संपति बिलसै राजसभा रघु-बंशी। सोई सुखगाय बजावति नागरीसोई सुख बदनप्रसंसी॥ सोई सुख सखी समाज बिराजत सुखवेता सुख अंसी। सोई सुख रंग छयो अंगानि परि सोई सुखमद उमंगसी॥ सोई सुख चाह सु-रंसित एक रस पियप्यारी सुखमंसी। सोईसुखचैन मैन मतवारे द्वै रस रहसि रसंसी॥ सोई सुख हित मो तनके भोगी सकृत लहै उन अंसी। कृपानिवास बसौ मन मानस राम हंस सिय हंसी॥ २॥

रागदेवगीरी मूलताल॥

मनमानी जानी जायरी। तुम सुखछकी छके सुख लालन प्रगट लसै न दुरायरी॥ पलक

सकौनी मति सरसौनी मोहनी द्युति दरशायरी । दृगरसभरे अरे अधरनसों बातैं सकल जनायेरी॥ लालकपोल रदन छत झलकै पुलकि बपुष सुख- दायरी । कृपानिवास बिलासनि तेरी अकथ कथा किमि गायरी ॥१ ॥

कछु अकथ कथा है आजुकी । हँसि प्रीतम चोली कस खोली बोली नाहिंन लाजकी ॥ बोलन हित चित यतन उपावै गावै बिनय स्व काजकी । अंक निशंक बंक करिधारी हारीहाहा हाजकी ॥ भुज भरी लई दई२ करितै पति पोषी रतिराजकी । कृपानिवास बिलास रमाई भाई सुरति समाजकी ॥ २ ॥

रसहाट बिकान्यो सांवरो । सिय गाहक

पियराम पदारथ पाय अमौलक भावरो ॥ नैन तुला तुलि तन मन बिसह्यो प्रेम सुधन बसि बावरो। महगो अगम सुगम करि पायो आयो फिरत न थावरो ॥ परमसुभग सुभव गुणसागर नागर नेह निबाहुरो। कृपानिवास बिलास नवलिसों रसिक सवादी रावरो ॥ ३ ॥

राग आसावरी चारताल ॥

जानकीरमन रंगभवन बिराज सराजत रसिक दृगनि जीवन धन। सुखमा सकल शृंगार शिरोमणि मारनारि वारो अनगिन ॥ १॥ चन्द जोति अरबिंद प्रफलता छन्द सुघरताई मुखचष बचसन। कृपानिवास हास मृदु झांकनि रस झरमानों बिजुरी घन ॥ १ ॥ कमल को समाधि

केसर प्यारी को रस पीवत रघुबर मधुकर। मधुर गुंजारत जनु कुल कीरति गावत सुघर सप्त सुर॥ खरज रिषभ गंधीर सु मध्यम पंचमधैव निषाध साधवर। कृपानिवास रसिक लंपट छबि जानकी जीवन की जीवन दृगभर॥२॥

आसावरी ख्याल चरचरीताल॥

सुंदर सुभग सलोनी श्री सिया श्यामबाम अंग लसियां। जनु घन मंडल विशद दामिनी दमक रामासिया रसियां॥१॥ करतकिलोल लोल ललना मणिलाल गरूबगरगासियां॥कृपानिवास छबि रास बिलासनि मंद हास मृदुहसियां॥१॥

मोहत मन मनसिज सरकारी राम रसिक प्यारी अखियां। निशित भाल हियरे गड़ि

बाहिर लसति पलक पखियां ॥ २ ॥ करकै ऊठति नेह की सरकै गर गसि हँसि लखियां। कृपा निवास भरै गुन इनके जिनके लगि चित चाहनि चखियां ॥ ३ ॥

आड़ताल ॥

सुभग सिंहासन आसन नवछबि नवलकिशोर किशोरी। राम श्याम घन मूरति मानौं तड़ित सियातनगोरी॥१॥ ललितविभूषणलसनि बसनि तन उपमा तनक टटोरी। मनहुँ सकल शुभचिंतक त्रिभुवन तिनकी आस उदोरी ॥ २ ॥ सारी फरकर ले दृगसों दृग प्राण एक द्वै गोरी। नभमेंपवन पवन ज्योंनभमैं नभमैं चन्द्रचन्द्रिका सोरी॥३॥गान केलि कौतिक सखि उघटत रिझ-

वति हेत बिभोरी ॥ मनहुँ उभयरससिंधु लहरसी लहरति सुथल करोरी ॥४॥ लाल लड़ावत लाल लाड़ली लाड़पाल लड़कोरी। कृपानिवास श्री जानकी बल्लभ मोहिय तै न टरोरी ॥ ५ ॥

पियके नैन प्रिया छबि उरझे सिया दृगपिय छबि लागे। मनु द्वै रूप सरोवर मीनन सदन पलटि सुख रागे॥ १ ॥ प्रीतम प्राण बसै प्यारी बश प्यारी पिया के आगे। कहि लालनमैं सर्बसु तुम्हरो मैं तुम्हरी बड़ भागे ॥२॥ तुम्हरी मया बड़ भाग बिलासनि बिलसहु सुख मन मांगे। लाल रावरो हित सु अमोलक मन सब हेतनत्यागे ३॥ तुमसोंलाल निहाल चरण लगि मानों भाग सुभागे। राज रावरी बस्तु प्राण तन पगे रहो

जिमिपागे॥४॥यह सुखसुधा सदा कोई पीवै कोई भूलै बिष दागे। कृपानिवास प्रसाद स्वाद सों प्यायो जन निशि जागे ॥ ५ ॥

रागललित आशीर्वाद॥

महारस भीनी रंग भरी जोरी ॥ सिय अनुराग पगे पिय सुन्दर पिय सिय रागनिवोरी ॥ १ ॥ सियकी मया विचारत घूमै पियकी रहसि समुझ मनभोरी। मिली श्यामता गौर युगल तन मृगमद केसरि घोरी ॥ २ ॥ छबि की छटासी वमड़ी दमकनि दामिनिहँसनि मनोरी । रस आनन्द मधुर झरइकरस सखि मनभर सरसोरी ३ ॥ गरभुजमाल सु लाल लड़ावति अली ल-

ड़ावति प्रियलड़कोरी। कृपानिवास श्रीजानकी बल्लभ मोहिय ते न टरोरी ॥ ४ ॥

सदा चिरजीवो रंग भरी जोरी। सदा बिहार करो रँगमंदिर रंगकिशोर किशोरी ॥ १ ॥ सदा सुहागल के अनुरागनि रँगे रहो बड़भाग बटोरी ॥ पियको प्राण बसो सिय सुन्दरि सिय मन श्याम बसोरी ॥ २ ॥ पियाकी चाह सुचात्रिकलों रहो सियाकी मया स्वाति बरसोरी ॥ सिय मुख चंद सुधारस द्रवो नित पियकी आंखि चकोरी ॥ ३ ॥ हमरे नैन प्राणकी सर्बसु अधिक अधिक सुख रस सरसोरी। कृपानिवास उपास महलकी टहलगी सो लगोरी ॥ ४ ॥



राग सुघराई ॥

जानकी स्वरूप सरस रूपकी उजियारी । गौर अंग कनक रंग छबिउमंग भारी ॥ भूषण युत प्रफुल बपुष लसत सुभग तारी । पाली पिय प्रीत फूल केसर बर क्यारी ॥ १ ॥ रूप बिपुलभार झुकनि सकति नहिं संभारी । मनु सुदीप शिखातरुनि थिरकि पवनि प्यारी। योबन मद घुमि घुमि झुमि तनखुमारी ॥ सुपति सुरस छकी सुभग माती मतवारी ॥ २ ॥ बरसुहाग भागभरी उपमा समनारी । बर उदार सुखद द्रवति पिवत रसबिहारी ॥ पंकज नवनीत तूल फलहु सुकुवारी । सुघरलाल सुकर लिये पलकनि बलिहारी ॥ ३ ॥ सुन्दर रंगमंदिर भरिछाई

मुखमारी। रजनिअंत मनुबसंत फुलीफुलवारी॥ मन्द हँसनि सुरसरसनि दसनि लसनि न्यारी। मनु मयूख राकापति पूरण विस्तारी ॥ ४ ॥ चितवनि दृग चलनि ललनि मिलनि हिलनि वारी। प्रीतम मुख देख देख दोष दुख अहारी ॥५॥ लाल ललित लाड़लड़ी लाड़िली हमारी । कृपानिवास कृपाधासि राम रसिक प्यारी ॥ ६ ॥

सियरामजु को ध्यानमेरे निशिदिन रहमाई। युगल बदन सुखमा सदन मदन अति लुभाई ॥ क्रीट मुकुट चंद्रकोर जटि मणि मुक्ताई । कुंडल कल करनफूल झूमक झुमकाई ॥ १ ॥ भाल युगलद्युतिय चन्दश्री अमन्दछाई । बिकटभृकुटि

मदन चाप चारि चरि चढ़ाई ॥ युग कपोल अ-
लक झलक मेंचक बलखाई। मनु दुरेफ माल-
कंज मकरंद लुभाई ॥ २ ॥ खंजन दृगन सैन
दैन मैन मदचुराई। नवल नथ सुहाग युगल
नाशिका सुहाई॥ अधरारुन बिंब लजित दशन
पांति पाई। कल कपोल बोल मधुर सुमन मनु
झराई ॥ ३ ॥ चिबुक बिंदु मिथुन मिंदु लसत
श्यामताई। जनु मिलाप कियो राहु बसी मित्र
ताई॥ सुभग माल पादिकहार कंठो तिमनाई।
ग्रीवललित सींवसुभग भूषणसघनाई॥४॥ श्याम
भुजा अंगदादि कंकनिजंटिताई। गवरिभुजानि
वलयादिक भूषण सुघराई ॥ जावक युत जान
हस्तपान अरुनताई। पुष्प लिये गवर श्याम

बीरी जु बनाई ॥ ५ ॥ उर सुगन्ध कर्पूरादि मलय केसराई । युगलउदर सुघर सकतकहि न सुभगताई ॥ रोम पांति मधुप अवलि लै सुबास धाई । गंग यमुनधार बहीनाभिअलि घुमाई६॥ किंकिनी नवीन छुद्रघंटिका सजाई । मधुर मुखरबीन मनों कामरति बजाई ॥ नूपुरबरपायल पद गुल्फ वर्तुरताई ॥ युगल पदसरोज अलिनि मनुसुरसरसाई ॥ ७ ॥ गौर श्याम सुरसधाम काम रति लजाई । अङ्ग अङ्ग नवल रङ्ग नवलहि तरुनाई ॥ कृपानिवास आस सुमति खास टहललाई ॥ ८ ॥

रागबिलावलरूपकताल छंद ॥

सिया स्वामिनीको सुभग सुन्दर सुखसुहाग

निहारिये। सुठि घुँघर श्याम सुजान पिय को नेह नवल बिचारिये॥ पचरङ्गनव भूषण करीतनु चतुरदश थल धारिये। पदकर अधर द्युतिहांस दृगकच बरण इति रँग तारिये॥ १ ॥ पगकटि भुजनि कल ग्रीव नाशा भालश्रुतिशिर सारिये। इति अङ्गराग सुहाग भूषण बिकृत शोभित प्यारिये॥ श्रीराम रसिक बिहार मूरति सुखद सुगिर उचारिये। कृपानिवास उपास्यकी छबि देखि तन मन वारिये॥ १॥

पद आड़ताल॥

सिया सोहिनी लखि राम रसिक दृग भरिकै। नाचत गावत अनुपुर नागरि कुलकत पुलकत कौतिक करिकै। तत सुख बिवस समाज युगल

माणि मोद परस्पर सब उर धरिकै । कृपानिवास बजी चौघरियां जैजै देव भये पगपरिकै ॥ २ ॥

राग सुघराई चौताल ॥

सुभग सुधाई राम रसिक की कोटि वकाई लार फेर डारिये । धनुसुतिय शशि सरित उर्गगति अंकुश खड्गलता सु निहारिये । खंजनंदामिनि पवन मनोगति अमित चपलता अबल परवारि-ये ॥ कृपानिवास बर बदन हास मृदु बिपुल बिलास मदन मद गारिये ॥ १ ॥

देखो सखि युगल रसिक दृगदौरदुरनि सुघराई। चपलाई मनमनोज रति कर कंजनि रुकि खंजन लरत लराई ॥ किधोंनटनिकी कला चार बिधि

पंकज कोसनचाई। कृपानिवास परस्पर दंपति अवलोकनि मनभाई॥ २॥

रागहिंडोल चारिताल॥

राम रसिक रस सुरति प्यारी संग अंग मिल रंग महल बस। आवत सखीगण न्याय चुकावत भाव बित्त हरि चित मंद हस॥ गावत गायन सुयश उच्चारत बंदी मागद विदुष वेद रस। कृपानिवास सभा सद मंडल चंड प्रताप अखंड अवधि लस॥ १॥

रूप राशि रघुबंश बिभूषण सेवत सहचर राज सभाभर। मारुति भरत लषण रिपुसूदन अंगद कपिपति लंकपाल बर॥ छत्र चँवर छरीधार बिजनप सन्मुख सुरजमुखी मुकुर कर। कृपा

निवास प्रताप जगत पर लसत सकल कर राम चाप शर ॥ २ ॥

मूलताल ॥

राज सभा रघुनाथ कुवँर की देवराज श्री ब्याज न पावत । निगम छन्द तन धरि बिधि शंकर शक्ति सकल नारद गुण गावत ॥ प्रणवादिक शुभ मंत्र तंत्र बिधि ज्ञान योग मख कौतुक ल्यावत ॥ कृपानिवास बिभव ब्युहअर्चा अंतरयामी राम रिझावत ॥ ३ ॥

सभा समय श्रीजानकी बरकै पांय परत । सब आय जुहारत राग रागनी तान सप्त सुर ताल भेद नृतनाद उघारत ॥ गायत्री सह छन्द प्रबंधनि श्रुति स्मृती संहिताउचारत।कृपानिवास

सुबिद्या नवधा दसधायै रास रूप निहारत ॥४॥

रागसारंग चारिताल ॥

मध्य दिवस की संधि समय सुख रंगमहल दोउ संग बसे हैं। राम स्वतेज अनंग प्रतापित शीतल श्यामा अंग रसे हैं॥ डूबत महा शृंगार सलिल मधि लोलत ललना लसे हैं। कृपा-निवास मनोज मौनधर कमल के उतारत स्वकर फसे हैं॥ १ ॥

मदन सघन शृंगार द्रुमनि मधि बिहर सिया सँग राम रसिक बर। भाव सुफल प्रिया हाव सुमन भृकभोगन पहिरत मालनी। सुरतिकर। सुनत मधुर धुनि सकुत बिभूषण योगबियोग मानमद

मृगधर ॥ कृपानिवास सुनायक स्वकिया भुज-शाखाधर झूलत रतिबर ॥ २ ॥

निधुबन मान मनावत प्यारो ॥ नर्मालापत प्रिया मनरंजन सुघर सबै गुनवारो । गाय प्रवीण सु बीन बजाई जान चुकाय तान छँद गारौ ॥ कृपानिवास हँसाय रमाई रामाराम हमारौ ॥३॥

चरचरी ॥

रँगिली रस रसिक रंगीलो राम । पीवत प्रीत प्रमोद विशारद स्वबस सदा निजबाम ॥ स्व-कियासुख संगर पतिनागर बिहरत त्रष्टिनि-नंगलकाम ॥ कृपानिवास अलि पलकन अंतर युगल केलि निजधाम ॥ ४ ॥

राजभोग समय सारंग मूलताल ॥

सजत सब पाकभवन सुखरीत। कोमल तन अङ्गार मृदुलनव नवल नेहकी नीत ॥ १ ॥ तन अनुकूल दुकूल बिभूषण सोधैं निसैं दलि कीत। झकनि अङ्ग माधुरी मलकनि मिलमन मंजुल मीत ॥ २ ॥ अधिकारी सखि बृंद बजावति आवत गावत गीत। कोई सोंधैं मगभवन सिचावति नव अनुराग सहीत ॥ ३ ॥ समय पलटि दरशावति सबरस सरसावति दोऊ मनकी प्रीत। कृपानिवास श्री जानकी बल्लभ टहल महल की जीत ॥ ४ ॥

खरी सबनागरि नवल निहोरि। सकुच बलैया

लै मुरि बैनानि कहति मृदुल करजोरि ॥ १ ॥ मन रंजन खंजन लोचन लोलसि बिंजन आलै ओरि। हे सुख बृंद पदारबिंद हम दृग अरबिंद धरोरि ॥ २ ॥ पाकनिलय मंजुल सुखउझकत सकल करो रस सोज करोरि । ललित बिनोद सुमोद सोध हित पलटि उमाहित ठौरहिं ठोरि ३॥ युगलचन्द आनन्द श्रवोअलि लोचन चन्द चकोरि। कृपानिवास श्री जानकी बल्लभ हँसि उमगे मनदोरि ॥ ४ ॥

मनकी उमङ्गन जानि सखी जन। पुष्पपांवरी पद पद्मनि धरि कोउ भज भरिलै गौर श्याम घन ॥ १ ॥ कोईकर चवँर छत्र बिजन धरि छरि-दारकोई बोलति अनगिन। कोई कलगान तान

तनतुरि सुरि रिझवति कौतिक केलि मगन मन
॥ २ ॥ कोई बलिहारी बदति पधारो कोई नेछा-
वरि करति सुमनि गन ॥ चले हँस हँसनि मग
शुकनि सुखमा वाहिज विकस महल छिन ॥
३ ॥ कोउ सिंहासन परमासन शुभभवन बि-
छोना समय सरससन । कोउ रसहास बिलास
प्रकाशित पधिरावत रसराज रसिक धन ॥ ४ ॥
शीतल मंद सुगन्ध लपटपट सिंधु मनो सुख
उड़ाति तरंगन । चरिमारुठ उतंगो मंगति कुमु-
मांजल मंजुल झरंगन ॥ ५ ॥ पंकज लोचन
अवलोकति सुख सेवा सोंज प्रबंधन । कृपा-
निवास श्री जानकी बल्लभ सुलभ दुर्लभ निग-
मागम भन ॥ ६ ॥

भई जीनार राजभोग की वारि। आयसु पाय सौज सब सहचरि धरति सुधारि सुधारि ॥१॥ मृदुर कर कंज धोय पद पंकज सुकुवारी सिय पिय सुकुवारि ॥ मणि मंडित चौकी मणिपट परमाणिमय चषक सुमनि मय थारि । ओदन घृतसोंधे बहुभांतिन पीत श्वेत मीठे छमकारि ॥ मेवा मिश्रति लोन खीचरी खीर मसाले मिष्ट मिलारि ॥२। हलके फुलके गले चींकने बिपुल भांति की स्वादिक दारि। तरकारी सारी जल थल की रुचिकारी सु मसाले डारि ॥ ४ ॥बेसन कढ़ी पकौरी डुकरी पपरी परसि पतवारि प्यारि। बरे प्रको रे कोरे सोंधे थोरे दधि कांजी के टारि ५ दधिसिखरन बहु मठेरायतेदूधमलाई माखनदेत

बरी बनाई तरी चारि युतभरी कटोरी घृतउर हेत ६
अंबकरोंदा नींबू अदरक कैरकन्द आदिक आ-
चारि। चटनी चाटपाट नहिं आवत ल्यावत पिय
प्यारी रुचि सारि ॥ ७ ॥ पापरि पुरी पिराक पुवा
बहु पारी पसारट बस्तु भरीरुचि । सुभग सुहारी
खजला फैनी गुझा कचौरी गिरी भरी सुचि ।८।
मठरी मठा सुधैंवर वा बरद पट दोवड़ाधरैकिनारे।
पगे मखाने नुक्तीदाने खांड़ खिलौने शक्कर
पारे ॥९॥ सीरा सेव सोज सेवामें पेरा पकसुचाख
सुहारि। ओला गोल गुलाब संकरिया बरफी
सुभग गुलाबी धारि॥ १० ॥ बेसन मूंग मगद
मोदक के लड्डुवा लाड़लड़ी रुचि जानि ॥
बूराबरसु जलेबी अमृती पयरूप तासे परसति

आनि ॥११॥ मिश्रीकन्द गुलकन्द मुरब्बा गुल पायरी पयपक्क परोसि। पिस्ता दाख बदाम चिरोंजी गरी छुहारे सेव धरोसि ॥ १२ ॥ सदमेवा फलफूल करोरिक जल उपबन के अम्ब अनारि मिष्ट खटोने लोने तीषे नीके खटरसमय ज्योंनार ॥ १३ ॥ एकएक रस अनगिन भांतिन स्वाद सुहानि बिबिधि प्रकारि। हरषि जिमावैं श्रीजानकी बल्लभ समयसरस सुखरस बिस्तारि ॥ १४ ॥ हास बिनोद बिलास परस्पर ग्रासदेत रसरास रसिक धन ॥ सरयूपय मंदाकिनि सहचरि पाय पिवावति पानि पाय मन ॥ १५ ॥ चितवनि हास बिनोद करतदोउ प्यारी प्रीतम परसित प्यार। कृपानिवास प्रसाद लियो सब महल

उपासिन को अधिकार ॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दोउ जीमत हास बिनोद मगनरस रंग उमंग अङ्ग अङ्ग बरसै । परसि परम्पर स्वातिक भांतिक ग्रास उठै मुखना परसै ॥ सुकर सुधारस कौर सियकों राम जिमावत हित दरसैं । दृग छोर सिहाय सुभाग भरे करचूमि महामन में हरसैं २ गीत बाद्य नवतान तरंगानि संगसुहागानि सुख सरसैं । कृपानिवास प्रसाद मिलैं मोहिं जाको महामुनि मन तरसैं ॥ ३ ॥

बिंजन समय बिनोद नवल नवनेह नयकर पै करसी । मानों पंकज कोशभरे कलकेसर कौर कमल ठरसी ॥ कंज बिलोचन उरझ बिमोचत

बारि सुधारस सोझररी । कृपानिवासी सबकरि बैनन परस बदन सियजू बररी ॥

भोजन करत प्रभु जनक नन्दन । प्रेमाकर सुन्दर जग बंदन ॥ शेष मैथिली रमण थारके सने कमल कर मुख अरविंदन ॥ १ ॥ बिबिधि प्रकार स्वाद हित मूरति कृपा चारुशीला अधिकारी ॥ नेह बिवस बरसुघर रामसिय मुकर जिमावत करक कनारी। सखी सकल रुचिकारि प्यारसों देति बदन हँसि कौरै ॥ यहबालि शेष आवेस समय को माद कतर करजोरि निहोरे ३ पूरवरोचिक पाक बताय पाय हनुमत सुखद खवाये । सरयू पय शीतल जलझारी रूपलता लल चाय पिवाये ॥ ४ ॥ खोडस कोट सखीसब धामनि

लेत प्रसाद प्रसीदसंगहि।देखतलाल बिलासहास रस खास खवासनि के रँग रंगहि ॥ ५ ॥ समय समय सुख मुक्ति भोगिया अचवन करि फिर मोहिं बुलावै।कृपानिवासी टरि प्रणाम करि गुरु पनवारो हर्षि उठावै ॥

अचमन करत रामसिय प्यारी। सरयू सीर नीर अमृतकी नागरि करबरझारी ॥ १ ॥ हास बिनोद परस्पर दोउ बाढ़ी मदन खुमारी। कृपा निवास अलीकर अँचरा परसत हेत सँभारी ॥ सखियन बीरीं सरस सँभारी। नागर दल सुकपूर चुनाकुटी सुखद लवँग सुपारी ॥ दारि चिनी सुचनी बर मेवा सुघर समय अनुसारी ॥ मनकी जानि श्याम करदीनी सुकर खवावतिप्यारी २ ॥

अधर दशन रसनाकी उपमा खोज मतिहारी ॥
कृपानिवास अली सिय पियकी अधरामृत अ-
धिकारी ॥ ६ ॥

आरती जानकी लाल की कीजिये । आँनंद
कन्द चन्द कोटिन छबि नैनरसिक रस पीजिये॥
प्रेम थार कर सकल सौंज भरि समय समय सुख
दीजिये। कृपानिवास बिलाश भवन मैं युगल
रमण रस भीजिये ॥ २ ॥

समय सुख रामजानकी सैन । रूपलता सखि
सुमन कली मृदुबीन बनाई ऐन ॥ सीतल मन्द
सुगन्ध प्रभंजन बहत सदा रुचि दैन । सहज
सुगन्ध अमन्द भवन में कन्द सुहाये चैन ॥ २।
उमँगे अङ्ग सुरङ्ग सुरसरस सेज बिलोलत मैन।

जयति प्रसाद निवास अली सुख निरखि सिरा-
वत नैन ॥

चरचरी ॥

सुख मैं सम सर्ग मिथुन संभव रतिचारु सु-
मन गमन सेज भवन रवन महल बर बिहारी।
सेज सिंधु कृत प्रसंस हेज सुरति मुक्तिबंस विल-
सौं युगहंस मनद फंस सदाविदारी॥ १ ॥ म-
धुर सुर उचारि का सु रागनी प्रचार कासुमनौ
कोककारिका सुमारिका बिकारी ॥ सीतल
सुगन्ध मन्द परसत बदनार बिन्द केल सिंधु
प्रगट मनुज हंस हंसिनी सुनारी॥ २॥ सौंधेकी
चहल पहल सौरभ मद महकि महल अलिनी
दृगगंध गहल टहल सुख सँवारी। आनयुग दंदु

विसद कस्यप नभभ्राज सुखदगगन्न जनु सुमन लसद शरद छबि उजियारी । सखि चकोर चक्षु पुंज रस विनोद कुमुद मंजु सुरत सुधा द्रवनि रंजु लाज कंज गारी ॥ जयति राम जानकी कृपाविवास दानकी जु अलि निवास प्राणकीस जानकी जिवारी ॥ ४ ॥

प्यारी बरबदति बैन मुरकि कछुक लजित नैन अपने उर चैन कुशल जान न मम मनकी। मैं विचारि सहो श्याम सबल सूर अष्टयाम अद्भुत तुव काम सुघर देखो गति तनकी ॥ कोमल जदिकर निहोर सुबस परे पविकठोर नाहिं को नोरि ग्रंथ परी प्रेम प्रणकी ॥ २ ॥ बर विनीत बदत लाल सुरुचिपाल तुमदयाल

नित निहाल करी करो आस आपु जनकी ॥ यही गुणधाम बाम कल्पवृक्ष द्रक्षकाम जीवन अभिराम आपु सफरीलो बनकी ॥ ३ ॥ प्रिया समझ हमसदोष पलटिधरो करो रोस पाछैं सतो खरारि रारोरति रनकी ॥ सियारास चिद्विलास चिद निवास कृपारास जाने विद्वैन बैन शक्ति का कथनकी ॥ ४ ॥

सुखरति सुखसाज युगल रस अनंग अंग नवल प्रफुलित मनु कमल रहासि सागर सुख-दाई। परि रंभानि कुचपाणि लसत उटिन झटकि मटकि हँसत लरत फनिपन कुलकोपि सुधाकुंड पाई ॥ संपुट करि कंपि पुलकि अतसि अंग विंदु झलकि मनु तमाल फलित झुलक थिरकि

हरिहलाई ॥ चिबुक वक्र युग समीप चंद बिंब अमन्द हीय हित महीप सौम्य मनो एक सदन थाई ॥ २ ॥ कटि प्रदेश मुष्टि ग्रहण लचत लंक बंक हरण मैनकर कमान पुष्प झुकनि बिन झुकाई । किंकिनी सु झनकि झनकि नूपुर रव ठनकि ठनकि सुरति खेत जीत मदन दुंदुभी बजाई ॥ ३ ॥ सेज सुभग लोलनिव मधुरानन बोलनि नर कोककल किलोलमि सौरति अमोल छाई ॥ ४ ॥ सियारामचिद्विलास अलि निवास कृपारास दृग उपास तिन्हैं भास आरमाते गवाई ॥ ५ ॥

अथभोगसमय ॥

करत हँसि सुकर खवासी राम । सखि निहारि

थकी लखि लोचन अद्भुत सुख निजधाम ॥१॥ नैन प्रछालि बदन पट परसत सुघर सनेही श्याम । भोग समय समससुझि जिमावत पावति बिश्राम ॥ २ ॥ नारिन नायकरुचि प्यावत मुसिकावत सुखिाम । सेष सुपाय सुभागनि भये परिपूरनि काम ॥ ३ ॥ बीणसुभग सुधारि प्रियासुख पीक परत करथाम । कृपानिवास विलासी पायो रीझसवासी नाम ॥ ४ ॥

सेजकी सीतल आरति करति । सुमनथारि सुखबानि प्रकाशित मधुर गान मध्य सुरति ॥ जलदल फूल पान प्राणनिको बारिबारि सुख भरति ॥ कृपानिवास निहारि सिया पिया बारि बारि पगपरति ॥ १ ॥

सेज सुखसोये सांवर गोरि । प्राण बपुष
मन लगम गोद मुख सिमटि भये एक ठौरि ॥
लपटि भुजातन सोहति मानो नेह लती सुख
द्रुम निसकोरि। पलक लगावर बदन मनोहर
मीन सुधासर बोरि ॥ सीतल मन्द सुगन्ध
सुचिन मैंसमय समझ गुन कोरि। कृपानिवास
सियापद पंकज सेवनि नैन निहोरि ॥ ३ ॥

रंग मंदिर सुंदर सैंजनी। सोये सुघर समझि
सब सहचरि प्रगटति नवनव फैलनी ॥ २ ॥
कोई करि कोटि कटाक्ष कटि ले गोंकि अनोखी
गैलनी। कोई सुख सकल सभासन मानै तत
वेता गति महलनी। कोइकर नवकौतुकहस्ता-
मल कोई नवसौंज सजैलनी ॥ कोइ मनादियो

युगल मनचाह निज गौमिलौं ले टहलनी ३।
कोईकहै कथा यथा विधि रसमयसुनि अनकथन
सिथलनी। कृपानिवास सुने दृग मन तन सिया
बल्लभ छबि छैलनी ॥ ४ ॥

रसकेलि मनानि मन कृतकरै । सखी सकल
सुखभाग बिभाजनि भावत प्रद नवभायरै ॥ १ ॥
भूति समझि बर्तमान बिलोकनि सो निहारि
उरसोंउघैर ॥ कामदलता रहसि नारी नित रसिक
राम सिय चाह फरै ॥ २ ॥ रहत सुलीन मीनपानी
लौं सन्मुख धारा सर बिचरै। सब सुख लालनकै
हितपालनि रबि रश्मिलौं दृगनिचरै ॥ ३ ॥ अ-
घट उदधिलौं देतलेत गुण पूरण युगशशि लखि
हलरै। कृपानिवास उपासिक माधुरी पीवतसब

लव नाहिं टरै ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

रागनट मूलताल ॥

रँगीले सखि रंगमहल रँग छाये। रंगरसीले रँग रसबस रहे रंग भरे सेज सुहाये ॥ १ ॥ रंग अनंग अंग सँग सरसाये रंग उमंग दरसाये। रंग बरकी सब सखियां रँगीली रंग अमल रँग गाये ॥ २ ॥ रंग सरोवर सुधि नहिं तनमन रंग सुलहर लहराये। रंग रहसि की थाह न पावत मन धाये नहिं आये ॥ ३ ॥ बिमल रंग सियराम धामको सकृत उपासिन पाये। कृपानिवास चढ़ै न और रँग जे यह रंग रँगाये ॥ ४ ॥

युगल रसको रति गाय सुनावै। प्रेम भरी सुख भरीसो सहचरीउर निजहेत जनावै१कृ.बहुँ सुनैन

बैन मन तनसों कबहुँ सुकर पद पावै ॥ समय समय सुख टहल महलकी हितु सब लाड़ लड़ावै ॥ २ ॥ अगम अगोचर गोचर करि हैं अवक बचन दरसावै। चिनमय रस चिद पिय प्यारीकों रसिक उपासिनु प्यावै ॥ ३ ॥ सियपिय सुख जन गुन प्रतिपालन अपने भाय बढ़ावै। कृपानिवास अली अलबेली सबकी चाहबढ़ावै ४

दूनो बतियन मेरेश्रवण लगेरी। लाल लड़ैति अरु लाल लाड़ले बतरावत रंग मगेरी। तुमसी सुंदरि पायप्राननी मेरेही भागजगेरी ॥ हमरेनैन सवादी हमसों तुव छबि रहत पगेरी ॥ तुमते अधिक रस सागर को है मोसों रसिकनगेरी। तुमसों चपकि चतुर चित चौकस चावर चहन

चिगेरी ॥ आज सलौनी सैल सहेलनि सकल सु सौंज सगेरी । कृपानिवास श्री सिय सौं पिय हँसि बोलत बचन ठगेरी ॥ ४ ॥

दोउ रूप माधुरी दृग अटकेरी । शोभित सुख-निधि समय सलोने सुरति स्वाद गटकेरी ॥ १॥ बसन बिगत कुच पाणि मनोंफणि युगमणि गहि ठटकेरी । अरे अधरे रस मधुर बिमोहित सुघरबार छटकेरी ॥ २ ॥ दमाकि कपोलनि बोल जघन खिस खुले हैं बन्ध कटकेरी । पलक लगे जनु खंजन पिंजर परे मदन हटकेरी ॥३॥ गौरिश्याम अभिराम रामसिय प्राण सकल घटकेरी । कृपा-निवास लालची लोचन लपट नवल लटकेरी॥



रागपुरबी चारताल॥

तेरेरी लोचन आजबिराजत छबिसों तीरथराज सुनैनी। अरूण श्याम सित बरण काम जल फरिन सु ललित त्रिबैनी॥ नेह अखैबट सुरति दान नट रामरसिक फल दैनी। कृपानिवास अली दृग न्हावत पावनि मुक्ति नसैनी॥

ख्याल॥

सैयोनीदिलभर देखि देखि जीवां॥ रंग भरी रसभरी सुमूरति चश्मौ दे बिचसीवां। इश्कमान सुबानाफिरावन सानू मोहत नीवां॥ मटकनि आवनि नैन चलावनि बोलनि मेहरसनीवां। कृपानिवाससियाबर जीवन आमीदरशन पीवां॥

नागर नवल सहचरी सब सुख साज सजेरी गावत मंदिर आई। उझाकि झरोखेन उघरी कछु गुण खलकन पलक समीप रुन झुन बनि मंडराई ॥ १ ॥ दोउ के मन प्राणजानि खरी सब जोरि पानि रसके निधान प्यारे जैजै सुखदाई। कृपाकेनिवास चीन्हे समय जनीय दीन्हे रंग रसभीने तनलोन्हे अँगराई ॥ २ ॥

भई अब सभा सदन की बार जागो नव सुकुमारो। मनमथ मद मथनि पुंज सुरति पथ सखि जयमति हित हेत उघारो ॥ अपने गुननि साज लिये सब लसि समाज राज सुरसकाज भ्राज सुख सँभारो। कृपानिवास प्रकाश मुख सर्वरीस दृग निकाय कैरवपति पारो २॥

सेजसुख जागे युगलकिशोर। मनु मदमाते कामगवद उठे सुखसिंधु झकोर ॥ भुजबर सुंड अंग अंग फेरनि सुरति लहरि चहुँओर। आलस मद घूमत अलिजल झूमत करत किलोलतिकोर ॥ झनकत भूषण घंट जंतरव द्रवत पटापुलनोर। प्रेम सु अंकुस सखि जनु बसिगत मन मर जीवा सकल टटोर ॥ उनहीं के गुण उनकों बिभूषित कृपानिवासी नैनन जोर॥ ४॥

सेवा सौंज लिये सबआई। रंगभवन उथ्थापन को सुख अपने गुण दरशाई॥ कोई करझारी वदन प्रछालत कोइ मृदु अंचरहितु परसाई। कोइ बर सोंधे अतर फुलेलन कोउ उबटनराई ॥ कोइ नव भूषन बसन शृंगार अंगकोई

पदकरन महावर लाई । कोई दृग अंजन तिलकन मोलनि कोई अलि अलक कपोल बनाई॥ कोई कल कंचनथार कटोरनि कोइ मणि चौकी आनि बिछाई॥ कोई धरि भोग सुयोग समयरुचि मेवा मगद मिठाई । कोई आनत कोई स्वाद बखानत कोई जिमावत अति हरषाई ॥ कोईजल प्यावत पवन ठरावति कोई गुण गावति यन्त्र बजाई । कोई अचवन मिलि मिथुन करावत कोई कर बीरी बदन खवाई ॥ ४॥ कोई सिंहासन सुभग सुधारति सुमन गेंद गादिसुमनाई । कोई पधिरावति चमर दुरावति कोई रबिमुखी सु छत्र फिराई ॥ कोई कर गान सुतान तरंगनि कोई हँसि हांस हँसाई ॥ ६ ॥ कोइ रसरीत प्रीत प्रग-

टावत कोइ नवकौतुक कलन रिझाई । कोइ बलि-
हारी जैजै उचरति कोई अवलोकि सिहाई ॥
७ ॥ जयति श्री जानकी बल्लभ प्यारे पर वार
तन मन जलराई । कृपानिवास थापि उथ्यापन
साजि आरती ल्याई ॥ ४ ॥

आरती उथ्यापनकी करि है । सुखमय सौंज
थार कंचनके वारत प्राण हरषि उर भरि है ॥
गीत बाद्य नृत्य मोद सु कौतुक चमर बिजन
छत्रन सब धरि है । कृपानिवास श्री जनकी बर
के रीझि रीझि पायन परि है ॥

वो पियरवा नोरी छबिकी झलक प्यारी मिलि
कै लसैं । मनु मर्कत तन खँची माणि घन
दामिनि मोरे हृगन बसैं ॥ केलि कलन कल

ललन लली के पलन चले पुलपलक रसैं ॥ कृपा निवास श्री जानकी जीवन पीवतिप्रान हसैं ॥

पिया सों प्यारी होउ कौन सरस रूपवारो । मुकर सुबर कर छबि तर हेत गवारि बदन हँसि-कारो ॥ यह मैं यह मैं दोउ मिलि झगरतराम रसिक रस हारो । कृपानिवास बिलास भवन में सखी साखि सुखसारो ॥

कवित्त ॥

सबके मनोरथ जोरत कर निहोरत बटोरत सु प्यारि प्यारि बोलै ढिग आयकै। येहो सुकुवारि सुख बागकी बहार लहो छूटनि फुहारि द्रुमडारि फूल छाय कै॥ बोले खग पुंज कंज सायर निकुंज लता गुंजैकलभृंगमंज बानी पिक गायकै ।

कृपाके निवास सुखरास मन्दहास हँसे गमने विलास आस नीकै सुख पायकै ॥ १ ॥

जैसे मग फूल औ दुकूल पगे जैसे मन भूल समतूलैलागमै । तीन सरन एक बरन चारि मिले चारि चरन श्याम पीत अरुन बसो मेरे अनुराग मैं ॥ नातै उपनाम रस कसैं कोन हंसचाल सो हैं भुजमाल लाललाड़ले सुहागमैं कृपाके निवास सियाराम सुखरास बने हांस औ बिनोद सखिकैसे बरबाग मैं २ ॥

अगमहाफूल ओ दुकूल भूखिफूल फूल हांस रङ्गमूल फूलडार लताभूल है । बैन झरै फूलचहों ओर नैनअली फूलवारी फूलभारी फूलसारा मन भूलहै।सभासोंजमाटफूल तानफूल गानफूलछाई

छबि जानफूल प्रान अनकूलहै। कृपानिवास फूल उभै अङ्ग सङ्ग फूल श्रीराम सिया फूल आराम फूलफूल हैं ॥ ३ ॥

चोर चकोर कुभावनि बलकर प्रबल प्रेम पंकज भरन मैं। श्याम गौर अंग नवरङ्ग भुज दामसंग कोटिरति अनंग ज्यों दीपदिन सारमैं॥ सखीजन पुंजछबि मंजुगान नृत्त्यबाद अलीगुंज पक्षीकुंज कोकिला डपार मैं। सायर के धाम धाम गामि अभिराम दोऊ हंसनि ले हंसनीलों काम रसफुहारमैं॥ कृपाश्रीनिवास रामबिलसैंसुभागनि ले जानकी सुहागनि सखि बागनि बिहारमैं॥ ४॥

रागगौरी मूलताल ॥

नमो नमो जै श्रीगुरु चरणं। भक्तिबोध उर

उदै दिवाकर मोह महाजन तम हरणं ॥ रोषशोक हरि कुमद बासनाकर्म अलूक अंध करणं। जिन के पद परसत दरशत सुख सुख सियराम कथा बरणं ॥ जयति प्रसाद परम गुण मेरे कृपानिवास सदा शरणम् ॥ १ ॥

जयति प्रसाद श्री गुरु मंगलनिधि। रंग महल रस रहसि माधुरी पीवत प्यावति चाह जवनि बिधि १॥ युगल चंदमुख चंद चकोरी सोरी सुख बरणै कोरी बुधि। जापै कृपा करै अपनो लखिदेति बिहारी अखिल संपति बिधि२ जबलगि शरण प्रसाद न आवे तबलगि कर्म भर्मना सुखकी सुधि। जयति जानकी बल्लभ हित बरु लाड़ लड़ावनि को मानो हद ॥ ३ ॥

जयति सुधारस मुख शशि बरषत मृतक सुजीव
जिवावनि कों मानोंसद । दादुर मयूर रसिक
जनके हितसुरति केलि पावस मनुबारिधि ॥ ४ ॥
जयति उदार अपार अखिल गति लै अबनीर
कीसकुल को विधि । महल बिलास बिनाश्रम
दै दृढ़ कृपानिवास उपास कृपासिंधि ॥ ५ ॥

सांझसमय सों हैं छबि सुन्दर । फूल महल तें
आवति फूलति छैल छटा छाई सब मंदिर ॥ १ ॥
फूलछरी कर हरिमाल गर फुल बिछे मग बाहिर
अन्दर । बीन बजावत गावति गोरी कोरनि सखी
चहों दिशगुन भर ॥ २ ॥ जजै लाल लाड़िली उत्त-
रत बिचरत सुघर चमर कोई करधर । कोई बलि-
हारी लै लै प्यारी सुकुवारी सुकुवार सुघरबर ॥ ३ ॥

रंगमहल सुख चहल सभाथल रूप गहल आये सुख निधिटर। कृपानिवास श्री जानकी बल्लभ निरखि निछावर प्रान सबैकर ॥ ४

समय सुहावनि सुंदर जोरी। सजी नवल तन सुरुचि सखीजन घनलौं श्याम सिया दुति गोरी १ ॥ नव भूषण नव बसन मनोहर नवल किशोर किशोरी। प्राणन माल सजी अलबेली फूलफैरै फलजनकरोरी ॥ रूप सिंहासन बिछे बसन पर गरबहियां पटटोरी। परम उदार उपासिन के हित छबि शृंगार सदा यकठोरी ॥ अष्टभवन की सखी सिमटि सब बनिठाढ़ी चहुँओरी। पीवत युगल माधुरी नैनन मतिवारी रँग बोरी ॥ ३ ॥ कोई बोलनि कोइ चितवनि सों रति कोई मुसकन

कियोरी। कृपानिवास पिय सिय सों लगिआँखैं मुरी नहिं मोरी ॥ ४ ॥

संध्या भोग सुधारै दासी।आनि धरे बिधिस्वाद करोरिन रुचि उपजावनि प्राण बिलासी ॥ १ ॥ मेवा मगद मिठाई मिसरी सोंद सलोनि सुदासी। जीवत हास बिनोद नवल दोउ परमप्रेम प्रकासी २ जयति जानकी बल्लभ जो रुचि जल भोजन सुख-रासी। कृपानिवासी करलिये झारी दासी खास खवासी ॥ ३ ॥

आरती साजि सखीजन ल्याई। कनक थार सुकुमार जोति छबि जगमग मंदिर छाई ॥ बाज-त ताल तान बीनादिक घंट मृदंग बजाई। नाच-त गावत कंकन किंकिन नूपुर मुख रसनाई॥

बिजन चमर गजगाहकरैंद सुघर सुछत्र फिराई।
सूरजमुखी सुकर कर कोई प्रेम प्रमोद बराई ॥ ३ ॥
वाराति जलपट प्राण निछावरि हरषि निरखि बलि-
जाई ॥ कृपानिवास श्री जानकी बल्लभ जैजै
धुनि सरसाई ॥ ४ ॥

मूलताल ॥

भनक सुनीरी कानन आज़ु। सरयू तीर रघुबीर अलापत करि करि प्रेम अवाज॥१॥आन परी मोहिं कठिन ठगोरी कोरी जानत मनगति बाज। उतउचाट मोहिं लगनि श्यामकी इतघेरी रिपुलाज॥२॥तनगहि रहि गहो क्यौं न गुरूजन परबश प्राण गये भाज। कृपानिवास मीनमसक सोबंसी तान रघुराज॥३॥

निरखत मोतन चतुर सुजान। नैन कटाक्ष तान बानन ज्यों भौंहैं कठिन कमान ॥ लगत मरम गति टरत नहिं टरी जाररंध्र मनो तन प्रान। बरजनको पिय कोउ न सुघर बर सीखे निपटकुवान हास कठनिमरन मृदुल तन बिननव नेहचवाव जहान। कृपानिवास परीबस धनुधर गरी गरब कुलकान ॥ ६८ ॥

लटकनि लटकि रह्योरी बेसरको। अरुण अधर पर राजत मानों हिमकण कमलेसरको॥ युग खंजन मधि कीर बदनसों उगलि न रहि बैठो छबि धरको। लघु उपमा दै बरनौं कामनि समता सुखमासरको॥ लालन भाल किलोलन सजनी पीत बिंदु केसरको। कृपानिवास बिलासिनि

सिय जू बदन मयंक मिल अवधि बिहारी बरको ॥

मूलताल ॥

अरुन अधर पर बिसद बिलोलत मुक्ता रघुबरनीको। मनुउज्जल रस कीरति कनिका बिहरत करवानीको ॥ हसन दसन बलपाथ राग मिल चितचल श्याम रूपमा मीको। कृपानिवास जाके दृग देखत फिरत बदन सुरसदानीको ॥

गोरी मनबस कर श्याम ठगोरी रामबीन सुन मार मरोरी। करकी हियरै तान सुकर की लाज काज तजिदोरी॥चपकी चितसों चितवत प्यारो बदन सुआंखि झरोरी। कृपा निवास रसिक बसबानिता मनस्यानी तन भोरी ॥

रागईमन चारिताल ॥

प्यारी रस मतवारे नैना तोरे। कठिन कटाक्षन जाछन बरषत करषत प्रान न मोरे ॥ काम कलाकुल बीर महाबल पीर न परखत निरखि अनेरे। कृपानिवास सुजान जानकी मो मनके उरझेरे ॥ ७२ ॥

बारी वो रंगीली रामा आंखियां लगीं ते रेरूप। कहा करौं कछु बस नहिं मेरा बूड़िगइ रसकूप ॥ चेटक लाय लगाय लियो चित चतुराइ में अनूप॥ कृपानिवास लगनि छूटै नहिं सुनिये अवध के भूप ॥ ७३ ॥

काफी ॥

कमल बदन पर भ्रमर मगन भाई। कुन्तल

पांति लपेटी सौरभ छाय रही सो रस की लगनि माई। चिबुक सुमेचक मनहुँ अम्बरस अलि-सुत भूल मगन माई। सिय मुख चन्द अमंद शरद को राम चकोर दृगन माई॥ अधरनमध्ये रदनकी दमकनि दाड़िम बिगस भगन्वामाई। कृपानिवास ओरयक शोभा ध्रानकीरजनु बैठ पोचगनमाई॥ ७४॥

सदा सुहागनि जनक किशोरी। आनँद कन्द चन्द कैरव कुल बरपाये भल भागकरोरी॥ भव धनु भंजन जे नृपगउर बन बन बनेह निहोरी। अंड अनेक चंड यश गावत सो नागर बस प्रेम ठगोरी॥ काल करासकंप भुव फ़ेरन अनुहर देव अकोरी। जो गुन निर्गुन सगुन गुन

सागर सिय गुन रसित रसिकमानि सोरी॥ शारद उमा शची रति कमला चरन सेवसकोरी। ज्यों हुतास कनिका रबि ऊपर बात मिलै धावै गति ओरी॥ पति की प्रान प्रानकी सर्बसु सर्बसु की बसतोरी। जे जन मन क्रम बचन सियापद रति प्रसंस तिन निगम बढ़्योरी॥ शील स्वरूप सहज गुन मंदिर अंतर श्याम लसै तन गोरी। कृपानिवास राम प्यारी छबि मो नैनन ते छिन न टरोरी॥७५॥

वारिबो रँगीला यार मेरा। वारी दशरथदा लाल सलोना यार मेरा॥श्याम सुंदर मनमोहन प्यारा अँखिया दे बिच डेरा। चंद्र बदन पै जुलफैं कटीली मुसनिने मन घेरा॥ कृपानिवास अवधि

छैला की चितवनि मैं उरझेरा ॥ ७६ ॥ ॥ ॥

रंगीली रामा प्यारी वारी वो सलोने नैना-वारी। योबन भरि गरबीली बाला प्रेम लहरि मतवारी ॥ बोलनि हँसनि मिलनि मुख मोरनि जीवनिअवधि बिहारी। कृपानिवास सियस्वामिन की पलकुन सौं बलिहारी ॥ ७७ ॥

रंग भीनी वो सिया जू बंकबिलोकन सब रस पोषनि बसकरनी रामा पियजू॥ कृपानिवास सिय स्वामिनि मुख बसी रहो मेरे हिय जू।

सिया प्यारे की लटकन मोहीरी। तनक दृगनि छबि निरखिनि बाजतितन मन की सुधि भोईरी। चपल भृकुटी सर रस दर दीन्हों छानों बिन बल सोईरी। कौन सुनै और कासों कहिये या रस

समझत कोईरी ॥ छैल छबीले अलकनवारे पलकन मैं रहे पोईरी ॥ कृपानिवास राम छबि ऊपर प्यारी बल बल होईरी ॥ ७९ ॥

राग अड़ानो चौताल ॥

एरी मैं तो बनि ठनि जात भरन जल सरयू राम रसिक ठाढ़े पुलनि बीच। देखतही रतनारे नैना कासिगई ओर नारी प्रेमकीच ॥ कटी प्रीत की सरिता अपर बल सूखे लोचन छबि सों सींच। कृपानिवास मन आवत ऐसी भरि के अंखियां लेहुँमीच ॥

चौताल ॥

मैं प्यारी तेरे नैन खंजन मनरंजन सुघरसिखाये चित चोरत।चपल चमाकि चहुँकोरन दोरत घूंघुट

पिंजर तोरत पलक पंख फरकीवत थिरकत निरखत तीखे नीके निहोरत ॥ कृपानिवासी सिया नारि नाहकी नारी मार मरोरत ॥

प्यारे तेरी निपट अटपटी बात। मुकर दिखावत कर जब लावत चमकावत मुसकात॥ लंबित वस केरान हँसि हेरत मेरे दुरि दुरि गात कृपानिवास श्रीराम रसिक मोसों मिलवत नई नई धात॥

अलबेली आंखिन झँकत प्यारी। लालन को मन गहनाहिं मोचित छबिमादिक मतिवारी॥ अंचल दे चंचल मुसकावनि भावत प्राणबिहारी। कृपा निवास अली पिया लोचन सिया कौतिक अधिकारी॥

भलाजू कुँवर तुम भये नये छैल । चोर प्रगट प्यारे बसत सोमबट रोकत पै न घटगैल ॥ लूटत योबन नव युवतिनके जानि परे अब रावरे फैल । कृपानिवासी भई भेट लली सों सुफल फली नई सैल ॥ ५ ॥

चारिताल ॥

हेलीरी मेरे प्राण जिवन धन प्यारी प्यारे राम सुजान । रसके रसीले दोउ रसभरी शोभा धरे रसके फरस मानो सुरस दिवान॥ रस के सिंगार किये दीये रस रस लिये हियेरास जिये पिये रसपान ॥ कृपानिवास दोउ सुरस बिलास भरे करे मृदुहास अरे दृग आन ॥

आजबने रामसिया सुंदर सुघर बर रसके रसिक

रसदान। रसकी प्रवीण लिये बीन नवीन सिया पिया रस पुलकि ललकि ले तान॥ रसहीकी रीझ रस भीज भेजाय रहे रसभारि जजै धूनिरस कर गान। रसके बिलास रसहास निवास अली रसभरी जोरी परवारों तनप्रान॥ हेलीरी रंग-धामं रंगीले प्यारे शोभित सियासंगं राम। सुरंग सिंहासन पर रंग राजे दोउ अंगअंग ये वारों कोटि सतकाम॥ सुरंग समाज बन्यो रंग सो वितान तन्यो रंग रसराज राजे रंग दृदाम। कृपानिवास प्यारे रंगरस रासभरे रंग मिलगवर सुरंग घनश्याम॥

देखो माई रंग भरे पिया सोहत रंग भरी सिया अंगबाम। रंगभरी बतियां रसिया रंगीली नरबर

रंग कोटिकरंग अभिराम ॥ रंग सो अभंग सर भवन तरंग ढरि चरसों सहेलिपररंग ललाम। रंग बिलास निवास अली मिलि झिलि रहे रंगगर भुज दाम ॥

रागहमीर चारताल ॥

राजत राम जानकी राजमहल मे रतन सिंहासन बनि ठनि। छत्र चमर गन चहौं दिशि सखिजनराग रंगधुनि घुमड़ि सदन ॥ क्रीटमुकुट पट जटित विभूषण सोंधे कि लपट उड़े श्याम गवरतन। कृपानिवासी जहां करत खवासीयुगल बदन पर वारत तन मन ॥

माईरी मोहनी मूरति रसभरी जानकी राम रसिक रसबस कीन्हे। चन्दबदन मृदुबसन छि-

पावति मन्द हँसनि गरभुज दीन्हे ॥ अंजन युत दृग खंजन फेरत मुरि मुरि हेरत हरिमनलीन्हे। कृपानिवास बिलासिनि के सुख सुघरबिलासी रंग भीने ॥

मूलताल ॥

तेरेरी दृग पर वारिवारि डारौं मीन मदन शर खंजन । पावस धाये खरसान चटाये मद प्याये मनु अंजन ॥ बंकसरल सित श्याम अरुणतर दीरघ पंकज उपमा गंजन । कृपानिवास मुकर मति मंजन राम रसिक मन रंजन ॥

दोहा ॥

सभासदन आनन्द निधि राजत समय समाज ।
मिलै नैन तन प्राणदोउ कृपानिवासी काज ॥

कल्यानमूलताल ॥

रंगमहल दोउ राजत रंगरसीले। लावनलंक अंकन की सानिधि भुज अंसनि गुनसीले॥नैन की बतरावनि भावनि लावनि बोलनि बदन हँसीले ॥ उरहित भाव मिले रुचि बरणित करि नित केलि कबीले । सखि जनमन की प्रीति चातुरी मिली जुहरत रति सो रती ले ॥ कृपा-निवास श्री जानकी बल्लभ रहसि उपासिक हीले ॥ १ ॥

मोहनी मूरति प्यारी प्यार गसीरी। प्रीतम को मन करत खवासी प्रीति शृंगार रसीरी ॥ चित-वनि चेरी चपल चहोंदिशि लाड़ लड़ावत चाह बसीरी। चौप चमर ढुरि सुरति सराहति लगश्री

लपटि लसी री ॥ पल बलिहारी दृगसनमानी पटरानी हुलसी री। कृपानिवास श्री राम रसिक बश जब सिया तन कहसीरि ॥

प्रीतम के दृग देखी कछु अहनाई । जोहे सोहै जानौ न बखानौ मुकर महावर लाई ॥ चितवनि चलनि सुकल द्रुति झलकनि मोमन की सब चाह मिलाई। लाल निहारत लालसखी जन लाली लावन जाई ॥ हितकी भावति सुघर दिखावनि सबकी चतुराई। कृपानिवास श्री राम सियाकी गरबीने हँसगाई ॥

रागहमीर रूपका ॥

बनीरी आज जोरी नवल किशोर किशोरी। निरखत दृगन तृपति परपरमा जो कछु उपमा

कहौं सोईथोरी ॥ पियभुजगर धर चिबुक सुभग तर परिकर हरषि २ तृणतोरी । कृपानिवास श्री राम भामिनी बान परस्पर होरी भोरी ॥

सरसंरगबोरी श्यामबाम अंगगोरी।मदपरगसित रसित शशि मोहन सोहन हँसत बसत रुचि मोरी । तरुण तमाल अरुण कलबेली पेली मरकत कनक द्युति ओरी । कृपानिवास बिलास भवन मैं रवन सिया बर परम लसोरी ॥

रागकान्हरो चारताल ॥

श्रीराम जानकी छबि मोहिं भावै । गौर श्याम तन बनि ठनि राजत अंग अनेक अनङ्ग लजावै ॥ रतन सिंहासन पर बर दुलहनि कबि भनि व्याज सुलाज बतावै । रस छबिमान रूप

परमाजनु मिले प्रकास सुहाव बढ़ावै ॥ नीलपीत पट जड़ि मनि गनबहु गज मणि जाल सूचय झलकावै । हंसबाल मुनि लालकीर भृक बेलित माल फसीन उड़ावै ॥ शरद् चन्दमुख अलकैं फनिजा जनु मधुहित आई ललचावै । कुंडल लोल कपोल परि दुति सुधा तड़ाग मकर कुलकावै ॥ चपल बिलोचन चलत दोउ दिशि कृपा खंजन रति मदन लड़ावै । मृदु मुसक्यान खान द्विज बीरी मनु चपला सुत फाग मनावै। बोलत हँसनि सकुनि मन सखिजन मनुरस चौपन चेंप लगावै ॥ चंदन खोरि दोरिचित्त लागत कर परकर शरभौंह चलावैं । कृपानिवास श्रीजानकी बल्लभ भावत कहत मनमथ उरलावै ॥

शंकर मानस हंस प्रसंशित मंगल मूरति निगम सिहावै ॥ रसिकनि की जीवनि दम्पति बर रूप सुधारस हँसि बरषावै। सहचर सकल समाज साज सुख राज राग रानी रसगावै॥ कृपानिवास बिलास रासमग लोचन पीवत कौन अघावै ॥

राजत युगल रसिक मणि छबिसों। मुकर कपोलनि चारु चारुद्युति दृगनि निहारि प्यारि की छबिसों ॥ देखत रास बिलास हासरस उपमा को नहिं है नवफबिसों। कृपानिवास उपासिक जीवनि सियबर सनबनै कहि कबिसों ॥

राग कान्हरो चारिताल ॥

सुन्दर श्याम रामरस मूरति दिनमणि कुल यश मंडल। पूरण चन्दबदन लखि लाजत कोटि

मदन मद खंडन ॥ क्रीट मुकुट मणि मंडन मंजुल कुंडल कलित बिलोलन गंडन । कृपा-निवास उपासिकनीवनि दोष कोश दुख दंडन॥

प्यारी आज बनी मनरञ्जन रामरसिक दृग मोदानि । खंजन मीन कमल कलईक्षण चित-वनि नोदनि ॥ सोम सकुचि जाके सुन्दर मुख पर शोभित शोभा शारद सोदन । कृपानिवास बिलास बिहारनि प्रीतम प्रीति बिनोदन ॥

मूलताल ॥

बलि बलि जाउँ लाड़ली लालन की छबि परमाई । अवधिबिहारिनि अवधिबिहारी रूप रसिक सुखदाई ॥ सुरतिरुतर कमलासन राजत राजमहल मनु मोहनि छाई । कृपा

निवास उपासिक लोचन पलफल करत कमाई॥ रसबस प्यारो प्यारी के गरभुजधरसों हैं। करत बिनोद भ्रमर पंकज मनु गौरव भाव सुसौर भलों हैं। कृपानिवास श्रीरामरसिक सों नायक नागर को हैं ॥

रागकेदारो चारिताल ॥

सभा सदन रघुकुल कैरवभर राजत अमल युगल बर चन्द। मन्द सुहास प्रकाश अवधि नित द्रवत सुधा महानंद॥ पाप ताप तम गंजन तेजासि दिवसरैन श्री अमन्द । कृपानिवास चकोर दृगन हित राम सिया सुखकन्द ॥

सुरबर पादय भूले बिराजत रत्न सिंहासन प्यारे । रसिक ध्यान श्रुति गान प्राणपति

जानकी रसमतवारे ।। करुणा बिलोकत परकर परखत भरत मनोरथ मोद अपारे। कृपानिवास रसिक दृगरोचिक रूपरसे नहिं न्यारे ॥

मूलताल ॥

रँगी प्यारी रामरसिक के रंग ॥ कंचन मध्य बिराजत मर्कत गवरश्याम द्युति संग ॥ नैन कमल मैं भ्रमर मनों बसि बदन बैन करि सुरस अनंग। कृपानिवास श्रीजानकी जानी प्रीतम प्रीत अभंग ॥

करत दोउ नैन मैं बतियां । सेज भवन की बारचलो अब लघु लागत रतियां ॥ लगनि लाल लालची लाघव लाई सुरति सुहागनि की पति-

यां। कृपानिवास श्रीजानकी जीवनं मिलवत रस घतियां॥

रागकेदारो चारताल॥

निरखि रामसिया शोभा दृगन सुखपायो। जनम रंक जनु कनक कोश भरि बिन उपचार चलि आयो॥ कंज बदन युग मधुकर मनु छवि छकि रहे सुख छायो। कृपानिवास लगनि नयननकी लगै आप मन संग लगाये॥

ललन मनभाये रामसिय छबि छाये। छिन छिन दरश सरसताई जननी सुत अनुराम सु जाये॥ पीवत मगन लगनि सुख अनगिन लोचन रोम जिते तनु छाये। कृपानिवास सुख कन्द निहारे चन्दारबिन्द लजाये॥

ये दोउ नैन युगल छबि अटके । लव लव लहक अनंग मकर ज्यों फिर न दई सुधि प्रीतम हटके ॥ देखि देखि मोहे नारी नर गान कुरङ्ग प्रबल बस ठटके । कृपानिवास सियाराम रूपकी छकनि छके सो फेरन छटके ॥

ललन कमल लोचन लाड़ली रूपटरी । खिलेही रहत सविता बल पंकज रसिक सवादि निपटेरी ॥ रंकराय ज्यों चकोर चंदलौं सकुनचेंप चपटेरी । कृपानिवास श्रीजानकी बल्लभ पलक कोर दपटेरी ॥

मेरी आंखिन दोउ लाल बसोरी । सुभग जानकीबल्लभ प्यारे न्यारे होय लसोरी ॥ नाचो गावो सैन मैनरस रसी गसी रति पुलकि

हँसोरी ॥ रूके रहो कौने लौं दृग मग जगकी आशनशोरी । आय सुखीरहो प्राण प्राणनी मोहिं चाहो ताहि भांति कसोरी । कृपानिवास भूलि मेरे ऐगुन अपने गुणन गसोरी ॥

रागऐमन चारिताल ॥

लगनि रामनीके रसिकरूप मदमाते । जोबन छकनि झकनि नैननकी बैन बदन मुसकाते ॥ लोनेलाड़ भरे ललनाके लोचन तन लपटाते । कृपानिवास सदा चिरजीवो सिया जु सुहाग सुहाते ॥ ४ ॥

नवल उर प्यारी उठत नवल रस चौपैं । नवल बेलि उलही नव केलिनि रूपजुवनरुड़कौपैं ॥ नव नव नेह नवल सुकुमारी नवल वैसतनऔपैं ।

कृपानिवास नवल सियाकी छबि कहि न परत हेली मोपैं ॥

रागभोपाली ॥

सुघरतन सांवरो उघरि चमकि झमकीरी। नैनप्राण बतरानि मिलनि छकि जानि पवन रमकीरी ॥ वह सुख देखि बरषि धाम सबके पावस लो छमकीरी। कृपानिवास श्रीरामसुघन मैं दामिनिसी दमकीरी ॥ १ ॥

सरस भीने प्रगट करजु रसकाई। पगेप्यार जलधारि चषनि सों मनकी छकनि जनाई ॥ शिथल भये नेह नये सानि सखी जन प्रीति करै सिवकाई। कृपानिवास श्री रामसियाकी कहि न परति सुघराई ॥

रागबिहागरा ॥

बैठे श्रीरामचन्द्र सीतासुखकंद संग बामअंग माईरी। रतनसिंहासन मर्कत कनक तन बसन बिभूषण छबि बन छाईरी॥ गायन गावत खरे निरतकारी निरतकरै बैजन्ती बजावै टरै सब सुघराईरी। कृपानिवासी जहांकरत खवासीउघरे बिलासी हँसि रसरसिकाईरी॥

मोहनीतान छई है रामरसिक की बसकरि लीन्हे प्यारी प्रान। सप्तसुर तीनग्राम रागनि विसदभरी मुरछनाटरी रससान॥ सुनत श्रवण सब सखीजन छकि रहीं भूलगईं तनमन खड़ी दियेकान। कृपानिवासी दासी करतखवासीतहां जहां प्यारो प्रियागुणगान॥ २१॥

रागसोरठ चारिताल ॥

रंगभवन प्यारे सुख कइबनबैठे जानकीरवन रस हँसि हँसि बरषत। बैननसों बैन रलेगरभुज अंक मिले नैनकी सैन चलै मैन मद करषत ॥ सभासुख सखी गावैं रागनी सोरठ भावै बैजंत्री बजावैं तान सुनि सुनि हर्षत । कृपानिवासी सखी दोउ हित परखत सोइ रस सरसत परसत दरशत ॥ ३० ॥

जानकी संग रामरसरंग भरे आज खोड़स कमल दल राजत। श्यामगवर तन भ्रमर केसर सन मिलन मदन रति लाजत॥ भुजकी धरनि हग टरनि हरनि मन भरनि नेह नव नागर

भ्राजत। कृपानिवासी सखी तहां रस गावत बीन सप्तसुर बाजत ॥ ३१ ॥

लाड़ली मुखपर रूप लावनिताई छाई है झुक रहीसोधें भीनी अलकै ॥ नागनी न होय जनुशशि रसछकि बसि थकित सकत नहिं चलकै। राम रसिक मनलोल कपोलने डोलै मुकर मनु मूरति झलकै ॥ कृपानिवासी सखी निरषि मगन हगर घरत परत न पलकै ॥ ३२ ॥

मूलताल ॥

मेरे हग अटकी प्यारे तेरी लटक। सरयू पुलनिजब कमल फिरावत हँसि हँसि आवत मेरी ओर मटक ॥ चितकों चटक भई भटक बावरी छटक गई है सबमन की अटक। कृपा-

निवासी प्यारी कहत जानकीको न लगीहै तुम सों लाज पटक ॥ ३३ ॥

प्यारे तेरे मारे मेरे तरफ़त प्राण। सुघर बजाई जबबीन मुगाई ॥ निर्किनिर्कि तीषी तीषी रस भरि तान मान बिसरगई। सुनत गान रसमृगनी घूमत मानों लगि हिय बान। कृपानिवासी कहैं कपटी सजन राम चलावो चोटैं करि पहिं-चान ॥ ३४ ॥

खाम्माच चारिताल ॥

प्यारी सिया आज बनि मद छकित अंग अंग नव यौबन नव रंग रली। केसर द्युति मकरंद नेह भरि रसिक भ्रमर हित कमल कली ॥ मदन तड़ाग अनुराग सलिल मधि लाज प्रीत

मिलकछुक खिली। कृपानिवास अलीकी स्वामि-
नि वय संधानि वय छबि सुभली ॥ ३५ ॥

ख्याल ॥

वोभला रसिक सांवरिया थारी लगन लगी। कृपानिवास श्री अवधिबिहार प्यारे रसबस करि म्हारी लाज ठगी ॥ ३६ ॥

वोभला बसोजी भमरवा म्हारी प्रीत कली। कृपानिवास श्री अवधिबिहारी प्यारे आवो रंगरलो बड़ी बात भली ॥ ३७ ॥

जंगला ॥

सदके मैं जांदिया तेड़े। मेड़े चश्म लगे तेउ रूप गुमानी राघवी बलि जादियां ॥ तेड़ें कलन परत पल छिन बिन देखे इश्कपरी गलकादियां।

कृपानिवास श्री रामसजन दी बिन दामौंदी बांदियां ॥ ३८ ॥

लाड़ली मेरी प्राणपियारी वो। भावती मैनु जनक दुलारी वो ॥ खंजन चपल सलोनीबाड़ि अँखियां चितवनि चलि अनियारी ॥ कृपानिवासी अलि चरण कमल पर पलकन सों बलिहारी ॥ ३९ ॥

तेरि सुरति है प्यारियां ॥ वो रघुबन्शी लाड़ले मेंड़े नैनादी जीवन प्यारे पलकन कर सानु त्यारियां ॥ कृपानिवासी वारी दावन लगा सुना कृपाकरो मैं नूतारियां ॥ ४० ॥

रागनायकी चारताल ॥

सोहत संग मंदिर सुंदर दोउ बाम अंग सिया

रसिक राम । छबि श्रृंगार मनोहर मूरति वारौं कोटिसत काम ॥ हेरत हँसि हँसि भरत मद रस टेरत सखियन लैलै नाम ॥ कृपानिवास अली लखि सन्मुख करत कहत हँसत प्यारी श्याम ॥

मूलताल ॥

प्यारी रसिक रामसों बतियां करत मुखमोरि हँसत। रसभरे भाव बिनोद बिलोकत प्रीतम को मन रंग रसत ॥ बोलत कलित किलोलत बोलत गरबीली गुनगान गसत ॥ कृपानिवास सिया स्वामिनिछबि लालनपरकरप्राणबसत ४३

नायकीरूपकताल ॥

जोरी रूपरवन आजबने मानों सुरस भवन। छैल छबीले नेह रसीले उजियारे मद छकित

नवन ॥ १ ॥ बदन सुधाकर सदन परम छबि रदन दमक अति हँसन रवन ॥ कृपानिवास श्रीराम सिया की मृदु बोलनि भरि बिहरै पवन ॥

प्यारी प्यार द्रवनि रामरसिक रस रसित सुमन। नैन चपल चलै पल पल इत उत छल बल कर मटक मदन दवन ॥ देखत और कहानि कौं ओरहीसों जा रस कबि बरणै कवन॥ कृपानिवास आस झिलमिलकै बलबल पल पल वारेलवन ॥

ख्यालमूलताल ॥

हँसि हग सैन दई मोरी सुधि न रई। निपट निकट पिय रसबस भये खेलखेलावत ओ भइ ॥

नेह लठौंनी कभोनी हटोनी कौन सुनै कछु शीतिनई। कृपानिवास श्री राम सुबाजी जोलाई सोई लाई लई॥

रागकामोक आदिताल॥

नवल रँगीली राग सुहागानि जानकी दिनकर बंश ताड़ग हंसमनि चितवन मुक्तादानकी॥ नाग मृगय मृग अंजन खंजन गंजन सरस गुमानकी। रंजन जनबनजातदृगानि छबि पुंजकला सबितानकी॥ २॥ उर घनश्याम ललाम लसे जनु दाम परम तड़ितानकी। राम श्याम उर कनक निलय जन जनु मुकुर कांति रति ध्यानकी॥ ३॥ नैनऐन सुखदैन बिराजै

कहि न थकी कबि भानकी। चंद अमन्द चकोर मोर दृग बान सदा मुसकान की ४ शैलपतनुजा बहानि सोमकी सुमन चाप तिय आनकी। कृपानिवास बिलास बिलासनि पदाहित करत यतन कलपानकी ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥

रागजंगल ॥

मैं सद के जावी वो राघवी प्राण प्यारे। लगै नैन खुब सुरति सांवल देखि देखि मतवारे ॥ कृपानिवास बंदी दी जी वनि साजन दशरथ वारे ॥ ८७ ॥

मजराजीमान लीजै राघव राम हमारो। हम सबरूप रोचिका प्यारे पलकबीच जिनपारो।

प्राण प्रिया सँगरंग बिहारो हमतन नैन निहारो। कृपानिवास अली अपनावो पाप लगाय उवारो ॥ ८८ ॥

तेरे सुरमें वाले मतवाले प्यारेराम दिलचुभेवो नैन सलोने । चढ़े काम खरसान करारे लगि गये लगनि लगोने ॥ कसकत अन्दर निकसत नाहिन छेदत छैल छलोने। कृपानिवास दिवानी कीनी जानी इश्क जगोने ॥ ८९ ॥

रागसोरठ जैजैवंती ॥

लाल निहारी चौपारि तैं चित चोरि लियो हे यासे मैं फँसिरही किशोरी। नव तेरी ललकार पार परसार मार मैं मार मरोरी ॥ दांवघात मैं

भाव भई हार जीतकी प्रीति निचोरी। कृपानिवास श्री राम रसिक पिय बाजी मैं राजी करि गोरी ॥ १०० ॥

राम रसिक की चौपरि मैं चतुराई भरि पाई जो खेलै मनलाई। दंपति जीतै रसिक सुजीते हारि कहत सब सार बचाई ॥ युगजीते फूटे ज़ुरबे की चाह चौगुनी चेत चिताई। कृपानिवास गुरु कृपा पठाई काची करपाकी घरआई १०१ ॥

रँगीली टुकनैनन को समझावो। सहज मदन सर छूटत नागरि क्यों काजर मदप्यावो ॥ इनकी चतुर दूतिका चितवनि मोमनको बहिकावो। कृपा निवास प्रिया बांके दृगसुधी बान पठावो ॥

रसिया जू दृग सुधी सैन चलावो । पलकु लही हरि चंचल आतुर मन पर कुही सिखावो ॥ मैं बलहीन सरन बल तेरी एरी चोट बचावो । कृपानिवास आस रसिकनि की अपनो करि अपनावो ॥

छबीली छबि जोर छाई प्यारी । प्रीतम प्रीति बनाव बनी नव द्युति पाई सुजियारी ॥ छबिसर अमल कमल मुखराजै लोचन भृंग बिहारी । मनमाती पिय सिय अधरन पै बेसरि लगत सँवारी ॥ भाल बिसाल सुहाग लालको दृगनि श्यामनाटारी । कृपानिवास बिलासनि सिय जू पिय मायक मतवारी ॥

ब्यारू भोग जानि रुचि ल्याई । कनक

कटोरनि थार सोंज भरि मनिवर चौकी आनि बिछाई ॥ १ ॥ निखरे सखरे मिष्ट सलोने लोने पाक पिराक सुहाई। मेवा मगद चटनी बहु मिश्री मिश्रत दूध मलाई ॥ २ ॥ पूरी पुआ पकोरी परसे पेरा पेढ़ा सुरुचि सचाई। जीमत सिया श्याम सुन्दरबर पृकठोर शोभा सघनाई ३ भांति भांति सुचि निदरि सुधारस देतसखी सु सिहाय सिहाई ॥ प्रेम भरी भरि नीर सों झारी लघुलघु अमृती हरषि पिवाई ॥ ४॥ प्रिय मुख सिय मुख पिय प्यारन सों लेत परस्पर हेत हँसाई। रहत कभू कर ग्रास थकित दोउ कबहुँ अङ्ग सिथल छिटकाई॥ ५॥ ब्यारू भोग बिहार बिलोकति चंद्रकलादिक सखी समुदाई। समय

जानि आचमन करावति पटदैबीरी पानबनाईह थार प्रसाद प्रसादसखी लै सकल सखी चहुँ दिशि ते धाई। कृपानिवास भई मन भाई साजि आरती सनमुख आई ॥ ७॥

ब्यारू शेष आरती उतारै। गीत बाद्य नृत्य नवल सखी जन के लिकतहुँलमोद अपारै ॥ जयति जानकी बल्लभ मुखपर सेज महासुख चाह निहारै ॥ खिलत विनोद कमोद कलीसी युगल चंद्ररस किरण पसारै ॥ १ ॥ धूपदीप जल पटउर के हित मुकर दिखावत समय सँभारै। जयति जानकी बल्लभ सुख मैं कृपानिवास प्राण तन वारै ॥

सैन समय सुख आरती कीजै। लाड़िलि लाल

निरखि छबि लीजै ॥ युगल चंद्र मुख चंद्र बिलोकत नैननि सों अमृत रसपीजै। राम सिया सुख सेज पधारे महाप्रेम आनँद रस भीजै।जयति प्रसाद निवास अली छबि एकपलक न्यारे नहिं हूजै ॥

रागबिहाग आडताल ॥

लाल अब सेज भवन पगधारो। सुरति समय सुख बिलसो नीके जियके भाव उघारो॥ टेक। मदन बनाई सेज सदनमें सफल करो रस रंग बिहारो। बीती जात महारस रजनी सुख मय साज सँभारो ॥ १ ॥ उमँगे अङ्ग अनंग जनावत रंगरलोरति जंगन हारो। कृपानिवास

श्री जानकी बल्लभ सखियन हेत बिचारे २ ॥

राम सिया रंग महल को पधारे । सुमन पांवड़े चहल गंध सुचि सखिजन राग उचारे ॥ टेक ॥ मंद मंद पग धरत करनि पर हंस ठवनि छबिहारे। खमा खमा कहि गहि भुज अलियां भुज गरबर दोउ प्यारे ॥ मध्य बिराजत रूपछबीली मैन तिया मदगारे । कृपानिवास अली मन भावन तलप समीप निहारे ॥

जानि सुख सखीजन सेज सँवारी । रतनजटित पलका मृदुकुसुमनि कोमल सुजनीडारी १॥ दृढ़सु प्रबन्ध बांधि मखतूलनि सम सुठार सुखकारी। सींचि सुगन्घ गेंदतकियादिक सौंज सजित मतवारी ॥ २ ॥ ल्यावति पधरावति

हरषावति लाल रसिक सुकुमारी। कृपानिवास तलप सुखलीन्हों राम निहारत प्यारी ॥ ३ ॥

रँगीली हठ छांड़दे पिय बुलावै चलो सेजू नवल जोबन को औसर आयो काम कल्प सुख लेजू। बीतत रजनी पलपल सजनी बढ़तबल महिप हेजू। कृपानिवास सिया नागरि मिलि राम रसिक रस देजू ॥

मूलताल ॥

सुघर सुहागनि करम निहारै। प्रीतम तेरे निकट प्रीतबस झुकिझुकि बदन निहारे ॥ तुव हट जानै निपट उदासी मदन मवासी बलबिन मारै। कृपानिवासी रामरसिकसों सुन री हम मनवारे ॥ ७ ॥

चारिताल ॥

सुघर सुहागनि पियसों बोलेरी। श्याम सुघर करजोर निहोरत तू क्यूं न अंतर खलरी॥ रूप जोबन गुन गर्ब न कीजै छींजै अपनो तोलरी। कृपानिवासी रामरसिकसों मिल छातियां जिन छोलरी॥

प्यारीरी मेरोमन तेरोमन मेरोतेरो बीचपारै सोकौन। सुमन सुगन्ध सन फणि मणि यकतन बीनधुनि प्राणबसै जैसे पौन॥ चन्द मैं चांदनी जैसे चंदन शीतलता कमल कोमलता जलरस लौन। कृपानिवासी प्यारी जहां तुहीं तहां महीं जहां तुमनहीं तहां बसौ हौन॥

प्राणनी मैं तुव प्यारि पल्योरी। जागृत

स्वप्न सदा श्री याचक प्रण नहिं पलन चल्योरी
अपर नारि भासति नहिं भावति अब छलमनन
छल्योरी। सदा सुदिष्ट रावरी जापर कामानल
न जल्योरी ॥ २ ॥ मनबांक्षित पूदशरण सुखद
सिय सुरति सुभावटरयोरी। कृपानिवास लली
जी मुरकनि निरखि सभागफल्योरी ॥ ३ ॥

सदा यह मन न रहत मनमो रे। तुव पद
पंकज मुकर पलोटौं दृग नित रूप निहारे ॥ १ ॥
रहसि उमंगि सागर लौं तुवउर ममउर सकल ब-
ढ़ोरे। तुव अधरामृत स्वातिस्वाद को चातृक
चित न बिछोरे ॥ तुव कुचकेसर गलित लगावो
कच मम पाणि बिरो रे ॥ तोमैं सत्यसनेही करधारे
चमर करौंशिर तो रे ॥ ३ ॥ करलै बीन सुगाय

सुनाऊं तव कीरति गुण गोरे ॥ सफल होउँ जब मुख कछु बोलो बलिजावों तृणतोरे ॥ ४ ॥ जबश्रीसुरति उदार सुभावक तब न टरों सो उर धोरे ॥ जब बढ़ि केलि सुसहानि रावरी कहानि करौंहौं रहौंरै । जब अनरोट भुजनि उधारों नहिं नहिं नाकसकोरै । तब निज भाग सराहो नागरि पद ग्रथ निहथ्य जोरे ॥ ६ ॥ पिय सुख जानि सिया अलबेली दृग च्युराय हँसि थोरे।कृपा-निवास श्रीराम रसीले समझि बसन तन छोरे ॥

रागखम्माच ॥ आड़ताल ॥

मेरो मन सुपाथिक मगभूल परयोरी। प्यारीतन कानन बहुरंगानि अंगानि अंग अनंग फस्योरी। राजी रोम सघन द्रुम छबिमय लताजाल फँसि

कौन टरयोरी । त्रिबली सरिता उचसैन कुचमध्य
गुफा बसि नाहें निकस्योरी ॥ खंजन कीर लसै
सुमनोहर बिपुल कटाक्ष सुमृगनि भखोरी ॥
ज्योंबन सिंह सुछंद फिरै गज धीरज नेम कुमान
दरयोरी। बाल ब्यांल लखिताल कपोलनि करन
कंज मकरंद धर्‌योरी ॥ भौंहैं मधुप पांति
आवति शर खंजन मारग अटक परयोरी ॥ ३ ॥
जयतिप्रसाद सुनो अटवी सुख रूपचन्द बरपोष
हरयोरी । कृपानिवास बिलासनि सिय कृपा
विचरोबन मन मैन डरयोरी ॥ ४ ॥

मूलताल ॥

जोइ तेरे भावै प्यारी जु सोई करिये मेरे मन
भावै। यह मन प्रान सदा तुव किंकिर क्योंकर

बदन छिपावै॥ तुव रसलीन मीनलौं निशदिन रोष कठिन दरसावै। कृपानिवासी सियसुख रासी हँसि क्यों न कंठ लगावै॥

लला जू मनहरनी तेरी यही बातै। नई नई बातै लला जु कहत प्रिया स्वामिनि मन भामिनि पग परसति रसघातै॥ कुच मींडत कर कच विथरावति नीवी मोचन यातै। कृपानिवासी राम बिलासी वे सुख बिलसो सबरातै॥ २॥

राजरंग भीनी हो जी रँगीली वे रातेरंग मानों। कृपानिवासी रे महल पधारो सेज डली बिछाई राजराय रसिक मनरी जानों॥

आड़ताल॥

रस चौपर रम रसिक रसिकनी। छबिघर चौप-

सार बहु रंगनिमार कटो अनि सटक अटकनी ॥ टेक ॥ खासे नेह नवल करधर मुखमांगे बर दावमसकनी । सुरति बिचार कलाकल कोकनि रोकनि मोकनि कसुक कसकनी ॥ १ ॥ फैल परयो सुख खेलन सिमटत हारिजीत रसप्रीत अधिकनी । सखियन के लोचन रिझवैया रीझ खिलावति अटक झटकनी ॥ २ ॥ मन प्रीतम रस कैदरंगबस जस चाहत नहिं स्वाद चसकनी । कृपानिवास श्रीजानकी बरसों युग फूटत नहिं टरत टसकनी ३ ॥

सोहनी आड़ताल ॥

पियमन हंस रसत सियसरसी । छबि तट

बैठि महाछबि पावत चितवनि मुक्ता जीवनि बररी ॥ टेक ॥ अधरामृत रसपान रसिनि तहांव किलोलत भावनि भररी । अबिचल सुरति अगाध चाहपरि कबहुँ बूड़त कबहूँ तररी ॥१०॥ कुलकत पुलकत मुलकत लंपट कुच कंजन बन बिहरनि डररी । कृपानिवास बिलास भवन सिय रससागर मैं मगन सुघररी ॥

नीवी करषत बरजत प्यारी । रस लंपट संपुट कर जोरत पद परसत पुनि लैबलिहारी ॥ टेक ॥ बदन घुमाय सिहाय महाजट तड़ित ज्यों चमकत बंक निहारी । तलपट राय मचाय धूम रस हँसि हँसि कृपा निवास सियहारी ॥ १ ॥ करो सुभग सुख मद मतिवारी । सुघरि उघरि

उज्जल रसतेरे मेरो मनहेरो अधिकारी ॥ परम उदारनि सरन रावरी मृदुल चित्त मोहित हित-कारी। कृपानिवास बिलास भरी सिय पिय को मन बसरस बिस्तारी ॥

सोरठ मूलताल॥

पिय हँसि रसरस कंचुकि खोलैं। चमक निवारति पानि लाड़ली मुरकि मुरकि मुख बोलैं॥ टेक॥ टुकरहो सखी सखी कछु गावति भावन मदन बिलोलैं। कटि गहि लटकि हटकती सुंदरि अधरनि परसि कपोलैं ॥ १ ॥ तलपटुराय लाय उरसों उर कोक कलानि किलोलैं। कृपानिवास बिलासी दंपति संपति रास बढ़ोलैं ॥ २ ॥

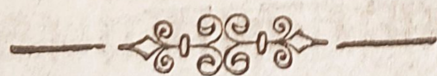
दंपति सुरति सुराग रसे हैं । सैन मुखर किंकिनि धुनि झनकति मैन मनोरथ गसे हैं ॥ टेक ॥ नीवी तरक करक बलया मृदु भूषण बसन नसेहैं । कलिज बिनोद ललित ललनाके लाल बिलोकि हँसे हैं ॥ १ ॥ अंगनि अंग अनङ्ग सुगंधित कंज सुरंग बिकसेहैं । कृपानिवास उपासनि के तहां लोचन भृंग बसे हैं ॥

रागबिहाग रूपकताल ॥

पौढ़े सुखसैन रैन रंगमहल मैं । सुरति सरोवरहंस हंसनी करत किलोल मदमदन गहलमैं ॥ टेक ॥ अरीपान बलपीय जीयकी सुजीवनि ग्रीबनिभुजभारि सुघर सहल मैं । अधर अधर धर

सकुच परस्पर भयोहै मिलन मानोआज यहल मैं ॥ १ ॥ सीतल मंद सुगन्ध पवन जहँ बहत भवन सुखसरस चहल मैं । जयति जानकीरमन कमल पद अली निवास नित रहत रहल मैं ॥

दोउ सुख झोकैं झरोषनि अलियां । सैन किलोलत लोल रसिक मन मैन बढ़यो ज्यों रैन सुघुलियां ॥ टेक ॥ उघरे अंग संग जुग राजत जनु सर पंकज कंचन कलियां । उरउर अरत दरत केसरबर करत बिनोद बिपुल मदरलियां १ परिरंभन चुंबन रस संनत चपला भूकंपन हलियां । कृपानिवास बिलास बिलोकति आस सखी जनमन की सुफलियां ॥



रागअड़ानामूलताल॥

मगन सरस रस प्यारो प्यारी। झटकि झटकि झपट लपट रस लंपट नागर नवल बिहारी॥ टेक॥ झुकि झुकि चरन करन पर धारनि तरुनि तमक भुज परन सुधारी। कृपानिवासबिलासी दंपति संपति रहसि उघारी॥

रागपरज आड़ताल॥

येजू प्रीतम बिपुलभई दुखटारो। नवनवल कलकोकानि पुनि तुम परमन कोमलतान निहारो॥ फिरन चलै चौपन चतुराई पाई चाह गहे तबकहैं निहारो। अलि निवास बिलासनि की सुनि अधिक तनगारो॥

कवालीताल॥

पुनि पिय सबल नवल तोलैं। जघन अंसु धरि अधर धरिगर भुज बिपुल बिलोलैं॥टेक॥ तलप प्रबन्ध तरक फरकज तन घनतर ताड़ित किलोलैं। कृपानिवास बिलास बिलोकति मोघन सखि जन धनि धनि बोलैं॥

मूलताल॥

सुरति बिमोद छकै नहिं प्यारे लवलव नव सुख पी मतवारो। इकरस द्रवत उदारनि पररस बिनय बिविधि कहि अपर उघारो॥ कृपानिवास बिलासनि सिधसर पिय मन परसु न लहत किनारो॥ २॥

अथसुरतियुध ॥ दंडक ॥

आजसियसाथ रघुनाथ आनन्दकैरै। सुभग सुचि सेज परहेज रस रसि रहे गसि रहे काम अभिराम दाम सिगरै ॥ टेक ॥ मरकत चित खंभ जनु कनक बेली खची रची बर मारक बिहार उपमा धरै । युगल सुकुँवार रसकार कारन हिलन मिलन रति संग रस रंग तुंगनि टरै ॥ १ ॥ कोककल कला बितचित मितना सुगम उमंगजनु गंगरबिजात रंगनतरै । चपल चातुर अड़ी आतुरी वरबढ़ी चढ़ी अंगअंग पर जंग जोधालरै ॥ २ ॥ उपट अटपट उठै लपट पट झटपट छुटै कपट सुखहरल सुखसरल संकित भरै । बिपुल पुलकानि छकानि तकानि चहुँपास

भलि अलि निवास रसरास आसन टरै ॥ ३ ॥

सुरति संजुग उमँगि युगल सांवत भिरै। चाह तुरगनि चढ़े चौपचावक वटेमटे छबिकवच अंग अंग सज्जन घिरै ॥ १ ॥ भृकुटि कोदंडधर चंड भाथा बरुनि निसित नाराच सुकटाक्ष कस-मसकरै। लगनि असितीव्र बरचर्म सकुचादि कर सखरतर शक्तिदृग हेरनी फिरफिरै ॥ २ ॥ हावनावक बिपुल भावगोला गलित उरज लै गुर्जिसंसरग सिय के सिरै। तरुन तमकन करै जंगजै मनभरै बिकटभट बिवसदा सूरजा सरि तिरै। अमितउरहतसंसर्ग सैनाचढ़ी गढ़ी मर्याद हति खेतकसिपुथिरै। बंक अहिलादपरसादजैजै भनै जयति भारास अलि निवास पासनटरै ३॥

अंग अंग सुघट भट समर साजिन सजे। सुरति रितुबसंत मैं कंतकामांनिखिलेमि संग रंगरस जग योधा बजे ॥ १ ॥ चलत आयुध प्रघट बिघट सुभटन हरखि फरक पटकेतु ध्वज खेत अगमन अजे। बजत नव दुंदभी किंकनी बिजय धुनि सुनत रसचाह अवगाह आरत तजे॥ २ ॥ भिरत उर कठिन मनुसैल गोला सुखर झनक गरहार करिकंट घंटान जे। तमक तरुनी तरुनभुज अंक मिलमल्लजनु भूषण दलि बसन कंटक कजे ॥ ३ ॥ बिपुल गुणकला कर ललन ललना लरै। टरै नहिं अदन सुख मदन गौरवलजै ॥ अघट अहिलाद दृगस्वाद परसाद दै युगल छबिरासअलि निवास पलपल भजै४॥

सरस संग्राम रतितलप मंदिर मचै । कुलक कूकत नवल तेज तमक तसबल बिपुल कलकोक करकारका वर रचै॥ १ ॥ ऊपटन वनव उठे झपट लपटनि लुटै सेजनभचंदघन रास मंडल नचै । मुकर मानि कुंज मैं पुंजप्रति बिंब लखि मानसर मंजुबहु हंस हँसनि उचै ॥ २ ॥ जघन तर अंसुजनु फंसरी के सगर पवन कदली हुलै सुघट कटयोलचै । रव नितंब वर पषाव बाजत सुघर उघर सखेत विव भिरत पलनाबचै ॥ ३ ॥ अमित घावन गजै हर्ष फिर फिरबजै तजै सुकुवारता सूरपन मनजचै । जयति प्रसाद अहिलाद दंपति भरै अचल संपति आलि निवास लोचन सचै ॥ ४ ॥

सुबल बद मगन भट बिकट भावन रले। जयति श्रीजानकी चाहजस भुजाधर झपट ललकारि करि सुघर सांवन झले ॥ १ ॥ बांध भुज हेजरस सेजपरडार हँसि कठिन कुचमारि पुनि प्यारि स्वातिकहले। शमसुखलीनतन स्वेद सुध बुध रही झटित सखिझुंड झुकि कहत सुंदरि भले ॥ २ ॥ चकित बरजोर सखी मसन दूखन अघं समरजयके साल सब उससले। अधर रस पाय उरलाय सांवत किये दिये बलगर्ब पुन भिरन सन्मुख चले ॥ विनय रस अस्त्र धरि प्राणी बसकरी सुमन गुन गुह्य कर प्रगट मन-मथ दले॥ जयति श्रीप्रसाद अह्लाद सुखरास प्रदयकृत निवासके नैन प्राण सुपले ॥ ४ ॥

अचल रण रंग अंग संग भंगनकनवै । उमंग दोउ बीर सुख सीर की भीर मैं खीर निध निरत मनों हंस हँसनि फवै ॥ १ ॥ हलित कंचन तनी कलित मर्कत धनी जुटत यौबन भरे कांदुन उपमा तवै । रूपकी द्रुमलता प्रबल मारुत हलित पतति पट भूषण दल सुमन झधर सबै ॥ भुजनि चर झपट रद चटक चटपनि उठनि मटकि हारि हरि रटनि संभोग भोगिन इवै । मनहुँ शृंगार इभ मत्त मद श्रवत आरत लपध धूर कर्पूर केसर छवै ॥ ३ ॥ बिवस रस रसिक सियसुखद सद मद बिसदाबिमद घनश्याम देखत जय जय जवै । जयति श्रीप्रसाद कर स्वामिनी जीत नवप्रीत बर दुंदुभी अलिनि-

बास बाजै धुवै ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जयति रति खेतबर युगल सोभाबनी। दलित तन बसन की लसन अद्भुत बसै हसै सुकुमार रसमार जीति अनी ॥ १ ॥ बिथुर कच अंग जनु कंज बन मधुपगन पिवत मकरंद सुखकंद सुखमा घनी। नखनि रद छत प्रगट निघट उपमा जदपि तदपि कहि ब्याज रसराज चूड़ामनी ॥ २ ॥ फूल घन अरुन जनु तड़ित मिलभासई नील द्रुम लपटि जत सुमन कंचन तनी। की धौं पादप लतालाल मुनियां बसी शशीमुख महि जु बहु आय पूजत धनी ॥ ३ ॥ मिथुन तन एक सखि देखि चकृत नवल कमल केसर लिये रैन रति दुति सनी। जयति श्री

प्रसाद सुखस्वाद रसरास रलि पलति सुनिवास नहिं जात महिमा भनी ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

रागसोहनी चारिताल ॥

आलीरी ऐसी प्यारी कीरति कहिब परत कछु रजनी ठर ज्यों भरत रंग। रामरसिक प्यारो रस बस ग्रसि रहे पलन चलत परसत सरस अंग। उलहत योबन कौपैं कामतरु चौपैं सुरति रस सरस उमंग। कृपानिवास बिलास बिहारनि सुबरस बादी कैसे निवरसंग ॥ ६४ ॥

मूलताल ॥

येमा सांवलिया गुमानी म्हारे लारे लाग्यो आवै। येमाकाईं जाणे काई करसी लारे लाग्यो

आवै। आगे पाछे डोलै म्हारो घुंघट खोलै नैन सों नैन मिलावै॥ येमा बांकी बांकी तानै गावै झुकि झुकि बीनबजावै। कृपानिवासी रामाराम की नवला लाजरु प्रीत सतावै॥ ६५॥

मैवारी लगनैं नैनातोरे सदके जावां लगि जांदे काम कपट देनीर। कृपानिवास श्रीराम रसिक प्यारो छांड़ि मया भये युवतीबीर॥ ६६॥

दिल लिता मैं डावे जादूडे नाल राघवकी। अखियां तान तान गावै खड़ा। कृपानिवास दे चस्म अड़ीले बिच रामरसिक प्यार राहै दाअड़ा॥ ६७॥

कवन गुण प्रीतम मोसारे गरहुठलागे। बीते रैन चकई लोचक कुटिल दुखाई अधिक सताई

पापी मैन ॥ कैधौं तीत अनीत प्रीत या राम रसिक बोलों सांचे बैन। कृपानिवास मरोर मोर अब जोर अंग सुखचैन ॥ ८८ ॥

लालन जिय लाड़ली भाईहो निरखि परख प्यारी प्रीति। रति सुख दीन्हों अति रसलीन्हों रसिक रसीलीरीति। लाड़ लड़ाई गरहुलगाई रंग रमाई प्यारे मीति ॥ कृपानिवास सिय सामिनि बल अजित रामालिये जीति ॥ ९० ॥

रागसोहनी मूलताल ॥

निपट कठिन तेरीबान परीहै। छैल नये तुम नई नइ रहसै ऐसे कैसे जात भरी है ॥ रसबस करि हसलगेही रहो नित टरत न पलक घरी है

कृपानिवास श्रीराम रसिक सों बतियांकरी प्यारी रतियांटरीहै ॥ ४९ ॥

आजराम रतियां सोहनी संगजगेरी । सुख सुसुहाग सुभाग सिया को पियअनुराग पगेरी ॥ हाव भावरस कौतुक करि करि मदन सुमंत्र ठगेरी । कृपानिवास अलि के लोचन लोभी ललकि लगेरी ॥ ५० ॥

बिसर क्यों गयेहो पुरानीप्रीत । प्याय सुधारस फिर बिष प्यावत कौन कि रीत ॥ जिन के प्रान सुजान पगेरस तिन सों मान अनीत । कृपानिवास अरज पिय सुनिये मति हो गरज के मीत ॥ ५१ ॥

करि बस लाड़ली रसीले लाल । कोकलन

हसि मिलन हरेमन आनपरे रसजाल ॥ मैंन जरी सैनन सों सींचै निपट सुपर यह बाल। कृपानिवास श्रीराम रसिक के होयरही गर माल ॥ ५२ ॥

राग बिहाग चारताल ॥

हे कोई बैरनि सुख मैं सतावै नींद निगोड़ी मोरे जिये को साल। नैना लगत रूप पलक लगावति आलस भरे भुज भरत लाल ॥ सेज सनेही संग तबरी मरोरे अंग नीच जरावै जर सींच रंगडाल। कृपानिवासी प्यारी नींद रुकारी राममिलत डारी उरकी माल ॥ १०२ ॥

हे सखी बार बार कहों तोसों रजनी रहोथिर

वेगि सुघर जिन जावो टर। अपने श्याम संग रंग रसबस रहितोरी ढरनि लखि जियडर॥ शशिकी सनाई कीधौं रबिकी बुलाई माई जात बिहाई कीधौं काज बड़ोघर। कृपानिवासी सियालाल लालची रैननि होरी दईमालगर १०३

प्यारी सुख संग सेजरिया रामरसिक रंग रली। मनु रतिराज मान विजय कर खेत जगावत बली उघरे अंग अनंग सुगंधित श्याम भ्रमर हित कमलकली कृपानिवास बिलास बिहारनि सुरति महारस पली॥ १०४॥

मेरे नैननमैं रसबसे रही नितरामा रामरसीले। सेज बिहारनि सेज बिहारी सुरति सुहाग गर्सीले

अवधपुरी सुख सरयूपुलन रस रास बिलास बसलि। कृपानिवास उपासिक जीवनि युगल जगत मैं जसीले ॥ १०५ ॥

रागपरज ॥

राम रसिक रस अवरस अब प्यारे दिलदी घुंडी खोलजी। रैनगई नगई गुमारियां क्यों रस मैं विषघोलजी ॥ समझ खिलारी नातर अब-ही पकर निकासौं पोलजी। कृपानिवास तजौ मगरूरी टुकमुख सों हँसि बोलजी ॥ १०६ ॥

परजराग ॥ आड़ताल ॥

निज बल्लभ संगरसी छबीली बल्लभी मधुर

सुमूरति माधुरी सुखसार शोभा रतिगसी ॥ १ ॥ गिरागोप रसरहसि उघारन वारति प्राणय प्राणयसी। चारु किलोल बोलप्रद नवनव सुरति बिनोद अ्रसी ॥ २ ॥ चौप चटी प्रिय अंग अड़ी पल पलक झुकीबर बदन हँसी । जयति जानकी सहित रसिक छबि कृपानिवास दृगबसी ॥ ३ ॥

पिय मिलकरत बिलास बिलासनि माधुरी । महा बिहार बिहारनि प्रगटे सुघररसिक मनिका जुरी ॥ १ ॥ वपुष घुमाय फिराय चक्रवतबिक्रम बिकट प्रकासुरी । कंदुक कलन ललन ललचाये चलन चातुरी आजुरी ॥२॥ जंत्र जराय सिहाय कुशलहो हसत लजाव सिहातुरी। जयतिजानकी रवन केलि रस अलिनिवास अलि आसरी ॥३॥

मूलताल॥

गरवीली गरवाई थां डालवो रैन यही अब थोरी भला। यो मन मेरा तेराही प्यारी तु जीवनि धन मोरीभला॥ अपनेकों अपने बस कीजै परबस की बरजोरी भला। कृपानिवासी हँसी राम बचन सुन संग बसी रंगबोरीभला॥

पद परसत मृदुगिराबद प्यारो। प्यारी जीवन प्रान प्राननी सुरति अनीतकी प्रीत पधारो॥ सहज उदारनि चाह बिहारनि धारनि ज्योंजन के प्रनिधारो। अमित गुनाकर सुख मंदिरबर बिनय मानपर हँसि उघारो॥ श्रीप्रसाद दृग स्वाद दई हँसि लई धार श्रीबदति सँभारो।

अलीनिवास बिलासनि उमँगी जनु रस सिन्धु तरंगनिहारो ॥ २ ॥

आड़ताल ॥

सुरति अनीत रमै रसकारी । गति सुकुवार उदार बड़ी सिय पिय जियकी रुचि मोद बिहारी ॥ कोक कला कल कूजत कमनी कठिन उरोज हने रतिचारी । हौं सुखदानि निदानन कीजै लीजै रस बस निज निजवारी ॥ २ ॥ टंकृति किंकिनि झंकृति नूपर बिजय लाड़ली गान उचारी । श्रीप्रसाद अहिलाद प्रकासनि अलि-निवास सुआस सदारी ॥ २ ॥

रस विपरीत सजीतसुहाई । कुलकत स्यामउर

सपल मानोंनभपर तड़ित सरितचपलाई॥१॥भुज भरि मसक रदन धर धूमत चन्दमरीचानि माल बँधाई।कबहुँ सुजंघ जरायदलत अंग संगनिसान बजाई॥ बैनी पीठ बिलोलत चंचल चावक मैन तुरंग चलाई। जयतिप्रसाद बिलास रहासिनव अलीनिवास सु प्रगट दिखाई ॥

लाल मनोरथ इवतसदा श्री सियजु श्रीलाड़ गहेली। सुरत बिसार सुरतिकी चौपनि ओपनि कोपानि केलि नवेली १ हाहामुखर सुघर कहि जानी अभिमानी मन मातहुहेली। भौंहचढ़ाय दपट लपटानी अंग अंगयेली॥ रसजयसुकुवार सुबर मंडनिनवलबिपुल गुनकहतसहेली। अलि निवास विलासनि प्यारीपिय सुख हेतसत्रेली ॥

रूपकताल ॥

सुख बरषत सखी आजकी ललकनि मै। मनहुँ बसन्त फूलि नव नागरि उमँगि अनंग अंग अंग पुलकनि मै॥ प्रगट मनोरथ सुरति सुहागनि रलि अनुरागनिकल किलकनिमै। करत किलोल सिया पिय उर पर जन दामिनि तरघन झलकनि मै॥ कंचुकधरक करककर भूषण कुण्डल उरझि रहै अलकनि मै। जयति जानकी बल्लभछाबिवर कृपानिवास बसिदोउपलकनिमै॥

पलकनि झुकनि सखी जन जानी रुचि वेता सिय रवन सुमनकी। अवसर पाय सेज नियरानी॥ बिगलित तलप सुधारि चहों

दिश ओटन साज मृदुलतन मानी। ऋतुअनु-
सासु सौंजधरी नव पान पदारथ बिबिध बिधा-
नी ॥ २॥ भोग बिहारसमै सुखदाइ ल्याइ सक-
ल सयानी ॥ कृपानिवास बिलासी दम्पति
किलकत हुलसत सिय रसदानी॥

श्रीलालन कैसे न भोगचितआयो। चसक
चहूँदिशि थार कनक मय भरे मधुर रस सखिन
जनायो ॥ जीमत रुचिरुचि रसिक रसीली हास
बिनोद सुमोद बढ़ायो॥ शीतलसलिल सुधाप
स्वादिक मनभर रुचि सुचि सुघर पिवायो १॥
अचैपान मुखपान मसाले बिलस प्रसाद प्रसाद
सुभायो। कृपानिवास सिया बल्लभ सुख मैं
प्रबन्ध अमंद सुगायो ॥ २॥

समय सुखसाज आरति ल्याई। प्रेम थारकर बात प्रीतमयछावि मिश्रित युगयोनि सुवाई॥ गावति केलि बजावति मानद सानद चपल चहूँदिस छाई॥ अपने गुण तनभाव प्रगटिकल लाल लड़ैती लाड़ लड़ाई। नैन सबन के तृपत न पावत रूपमाधुरी महाडुरी पाई। कृपानिवास बिलास सियाबर श्री प्रसाद बरजोर देखाई॥

रागमालकोसचारताल॥

मालकोसमति वारी प्यारी प्यारे रामहित नवसुख उघरत। भाव रतन रसहाव बिविधि निधि नेह नरम निज नाहके सुधरति॥ लोभी लाल लगनितर सहचरी भोगनि लवलव लगि

रति। कृपानिवास अली के लोचन पीवत जीवत लखि लखि दंपति ॥ ४४ ॥

मूलताल ॥

लाड़िली ललचाय लगन बस लपटि रही रस रंग लालसों । मनु दामिनि घनसंग सुहाई कमक लता युतमालसों ॥ भ्रमर पियो रसमत्त जामनी गही कमलनी करदल जालसों। कृपानिवासी सियरे नैनसतिलखि मरगासिरामरति पालसों ॥ ८५ ॥

अवतो अलसानी अखियां निंदरियां भर आवें प्यारे। घटत रैन तुवमैन बढ़त ज्यों मावस गत ससि तारै ॥ पलकूल गनदे मोहिं भुज

भरलै जगो जगोजब राजदुलारे। कृपानिवास श्रीराम सियामन नेक न भावत न्यारे॥ ६६॥

जानकी जीवन प्राण पियारे। सेज सदन मैं मदन बिलोलत बोलत बचन उघारे। कदन काम मद हदन रही जद रदन झपट तन छदन बिसारे। कृपानिवास उपासिक अखियांने जै शब्द उचारे॥ ४५॥

चारताल॥

सुरति श्रमित भासी अंग अंग बदन उबासी। सखी मनजान झटित सुख सेज बनावहीं रितु हितु जानि मनोहर रुचिमय सोंज सकल धरि कछुक बिछाय बसनमृदु कछुक उठावहीं॥

चाहसरस रसदान उपधानतुराई भाई मन भ्रान-
नी हरषि सुहावहीं । पौढ़े सुखरास दोउ सखि
सब आस पास कृपानिवास सुख टहल
लगावहीं ॥

तालयात्रा ॥

येरीये सुख मंदिर सेज रसीले सोये । प्रीतम
अंक लिये रससागर मनुनिस केसर पंकजगोये॥
पिय उरभुज शृंगार सरोवर परमा बेल बिमोये।
वदन उभय जनु सदन सुधाकर मिलत सुप्रेम
समोये ॥ गवर श्याम पद मिश्रित राजै मनुसु
प्रिया गनहोये । कृपानिवास बिलासी दंपति मैं
निज नैनन पोये ॥

रागकालिंगड़ा ॥

राघव जी काईं जायछे प्यारी जामनी राज म्हासों रंगमानों हँसि गरलागनी। दिन दुर जनसों लागत हियरे कंत बिछुर झारे कामनी॥ नीकी लागत आवत रजनी फीकी लागत गाम-नी। कृपानिवास श्रीराम रसिक सों रसबस बोलत स्वामनी १००॥

मनभावन सुघर गरलागरे। अवधि निहारी बिसर खुमारी चाह जगी क्यों न जागरे। तोरी कठिनता जानी गुमानी तुमजानी नहिं मारी लागरे। कृपा निवास गहो बृतमोसों नींद त्रिया रति त्यागरे॥ ४६॥

अबतो प्यारेगरवालागो पीर पिछानों मोरी॥ कबकी जगाऊं प्यारे पलकन खोलो रसन स्वाद चसकोरी ॥ जानी हठकल बल रति उरझी गर भुज देवर जोरी । कृपानिवास बिलास रमावो राम रसिक मैं तोरी ॥ ४७ ॥

प्यारी रसिक रामबस कीन्हेरी । सुरति सुगंध लुभाये मधुकर सुमन अंग भरिलीन्हेरी ॥ रंग रमाये संगसुहाये अंग अनंगन भीन्हेरी । कृपानिवास पिया रसलै सिया अपने सर्बसुदीन्हेरी ॥

राग ललित ॥

नितरोजी कांई लाड़ली अणबोलनो । होहो हेरासिक रंगीलो प्यार रस बस थारे रातिरामनावें छोंड़े ओलनो ॥ यौवनरो सुखगरभ गवावै रस

मैं विष नहिं घोलनो । कृपानिवास श्रीरामरसिक
रो मिलनो छै जु मोलनो १०८॥

चारताल ॥

ललित लाड़ली के रंग रँगे हैंरी लाललोने नैन । तनक गवर छबि निरखि पलट इति ये तो पगे सारी रैन ॥ लगन छिपाई धरी श्याम ताई रामप्रिया हग मनको चैन । तदपि प्रगट कहुँ रेख अरुणताई कृपानिवासी सुखदैन ५२॥

मूलताल ॥

मोहिं सोवन दे रैन रही थोरी प्यारे । सब निस संग अनंग रमाई अंगनि आलस भरे ॥ प्रीतम प्रीतिकीरीति न जानो स्वारथमीतनिरे । कृपानिवास सियासुकुमांरी हँसिकछुनैनतरे रे५३

उरझरहे बार सिर पेंचन सों रामरसिक सिय प्यारीके।नाहीं संभारत रतिमतवारो बसमैं परयो मतवारीके।नासाचढ़ि बिलोकनि तीषी भीजगये रसबारीके। कृपानिवासी मान मनोरथ उघरत प्राण बिसारीके॥ त्रैतीगोरी ॥

जैसीतावर राम जैत सुखसागर नागरप्यारी। जयगुणमालबिलासीप्रीतमसुरतिबिहारबिहारी॥ जै रसमूलसुहाग रसीलीमानंद रूपउज्यारी। जै मुखचंद चकोरसांवरो कामिनि केलि अहारी १ जैरसरहासि उदार निकारनिकोबिद केलिकलारी जैरस ईक्षक अखंडबिनोदी संपति कोस उघारी॥ जैपियनैन कमलकेसर कलजीवन जीयजियारी। जै उरोज पंकजबन मधुकर भोगी अधर सुधारी

जै पियमानस हंसनि बाला बिमल बिनोद अपारी । जै चितवन सिय स्वाति सुचात्रक परम सुखासन धारी ४ ॥ जै बल्लभ रतिदानि सुहागनि राग रँगीली भारी । जै सियबोल अतोल बलाहक रसिक मयूर अधिकारी ५ ॥ जै सुखसेज हेज बरषावनि सावन सुरति सुखा- री । जै सिय सार सुप्यार पियासे पीवत तृपित न नारी ६ ॥ जै पिय प्राण प्रीति प्रतिपालक मालक तन मनसारी । जै सियसंग अनंग बि- लासी चपल चतुर सुखिलारी ७ ॥ जैतिप्रसाद अनादि केलिरस बस अहिलाद उचारी । जै गुनरास सियाबल्लभ पर अलिनिवास बलिहारी॥

इति कृपानिवासकृतपदावलीसमाप्तम् ॥